हास्य एकांकी

तुरंत अकाउंट

— स्वदेशकुमार

(एक मध्यवर्गीय परिवारका ड्राइंग रूम। मुन्नू सोफे-पर उदास बैठा है। दाएं दरवाजेसे कुछ बच्चे हंसते शोर मचाते अंदर आते हैं। मुन्नूको उदास देखकर सबको आश्चर्य होता है। चंदू उसके पास जाता है।)

चंदू (आश्चर्यसे) : मुन्नू, पिकनिकपर नहीं चलना है क्या? चल, जल्दी उठ।

मुन्नू (उदास-सा) : मैं नहीं जाऊंगा।

श्याम : देख, मुन्नू, प्रोग्राम गड़बड़ मत कर।

मुन्नू : मैं क्या करूं? गड़बड़ तो सारी पिताजीने कर दी है।

श्याम : क्या किया उन्होंने?

मुन्नू : ऐन वक्तपर पिकनिकके लिए पैसे देनेसे इंकार कर दिया।

चंदू : क्यों?

मुन्नू : बोले कि आज पैसे नहीं हैं।

कुंकुम : यह कैसे हो सकता है कि उनके पास पैसे न हों?

मुन्नू : यही जब मैंने पूछा तो बोले कि कल सब पैसे बैंक-में जमा कर दिए।

कुंकुम : तो आज निकाल लेते।

मुन्नू : कैसे निकाल लेते; आज इतवार जो है। इत-वारको बैंक बंद रहते हैं।

श्याम : धत् तेरेकी! यह सब गड़बड़ बैंकके मारे हुई।

कुंकुम : पता नहीं लोग बैंकमें रुपया क्यों जमा कर देते हैं?

मुन्नू : पिताजी कह रहे थे कि बैंकमें रुपया इसलिए जमा करते हैं कि घरमें रखा रहनेसे चोरी हो जानेका डर है।

कुंकुम : अजी, यह बात नहीं है। बैंकमें रुपया इसलिए जमा कर देते हैं ताकि बच्चे हर समय पैसोंके लिए तंग न करें।

मनोहर : तुम सब लोग बुद्धू हो!

कुंकुम : और तुम बड़े अक्लमंद हो! या तो साबित करो कि हम सब बुद्धू हैं, नहीं तो सब बच्चे मिलकर तुम्हें सजा देंगे।

मनोहर : लो, मैं साबित किए देता हूं। मेरे पिताजी एक बैंकमें मैनजर हैं। वह कहते हैं कि बैंकमें रुपया जमा करनेसे एक तो बचत होती है. . .

कुंकुम : बचत कैसे?

मनोहर : अगर हाथमें रुपया हो, तो हम बेकार उसे खर्च कर देते हैं। दूसरा फायदा यह है कि बैंकमें जमा रुपयेपर सूद मिलता है।

श्याम : अजी, बस रहने दो। हम तो यह जानते हैं कि बैंकमें रुपया जमा हो जानेके कारण आज मुन्नूको पैसे नहीं मिले।

कुंकुम : मैं कहती हूं ऐसे बैंकसे क्या फायदा जो वक्तपर हमें रुपया न दे!

मुन्नू : अगर बैंकमें मेरा राज हो जाता, तो मैं हर दिन और हर समय बैंकको खुला रखता।

चंदू : वाह वाह, क्या बात कही है! बैंकमें हम बच्चों-का राज होना चाहिए। **(अन्य बच्चोंको संबोधित करके)** क्यों, भाइयो, क्या राय है तुम्हारी?

सब बच्चे : हां, जरूर होना चाहिए!

चंदू : तो सबकी रायसे यह तय पाया कि बैंकमें बच्चोंका राज हो जाए। नेक काममें देरी नहीं करनी चाहिए, इसलिए आज ही, बल्कि इसी समय किसी बैंकमें चलकर अपना राज जमा लें।

मनोहर : लेकिन आज तो इतवार है। कोई बैंक खुला नहीं होगा। और जबरदस्ती किसी बैंकको खोलकर अंदर घुसनेकी कोशिश करोगे,तो चौकीदार तुम्हारे सीने पर बंदूक तानकर खड़ा हो जाएगा।

चंदू : खाली या भरी हुई?

मनोहर : भरी हुई।

श्याम : तब तो इस काममें खतरा है। वैसे खतरेसे हम डरने वाले नहीं हैं। पर यह काम गलत है। कोई और उपाय सोचना चाहिए।

कुंकुम : मेरा विचार है कि क्यों न हम यह सोच लें कि किसी बैंकमें हमारा राज हो गया है।

श्याम : लेकिन वह बैंक है कहां?

कुंकुम : इसी कमरेमें।

चंदू : वाह वाह, बहुत बढ़िया विचार है। लेकिन बैंक चलाया कैसे जाता है—यह भी किसीको मालूम है?

मनोहर : मेरे पिताजी एक बैंकमें मैनेजर हैं। मुझे सब मालूम है। हम एक सहकारी बैंक खोलेंगे।

चंदू : वह क्या होता है?

मनोहर : हम सब बच्चे सवा सवा रुपयेके शेयर खरीदेंगे। इस प्रकार हमारे बैंकमें आठ रुपए पिचहत्तर पैसेकी पूंजी हो जाएगी। बैंकको जो भी लाभ होगा, वह बराबर बराबर सबमें बांट दिया जाएगा। बोलो, है मंजूर?

सब बच्चे (चिल्लाते हुए) : मंजूर है! मंजूर है!

मनोहर : तो निकालो चटपट।

(चंदूको छोड़कर बाकी बच्चे बड़ी फुर्तीके साथ अपनी जेब या बटुएमेंसे सवा रुपए निकालकर मनोहर

को देते हैं। मनोहर रुपए गिनता है।)

मनोहर (सिर खुजाते हुए): ये तो सिर्फ छह रुपए पच्चीस पैसे ही हुए। दो बच्चोंने अभी नहीं दिए हैं। कौन हैं वे—बोलो?

मुन्नू (उदास होकर) : मैंने नहीं दिए हैं।

मनोहर : तो निकालो जल्दीसे।

मुन्नू: मेरे पास होते, तो यह बैंक खोलनेका विचार ही तुम्हें कैसे सूझता। मैं कल पिताजीसे लेकर दे दूंगा।

मनोहर : तो फिर तुम कलसे ही बैंकके शेयर होल्डर बनाए जाओगे।

मुन्नू : फिर तो एक दिनके मुनाफेका घाटा हो जाएगा।

मनोहर : वह तो होगा ही।

मुन्नू (विनती करते हुए): मनोहर भैया, मेरी तरफसे तुम रुपए जमा कर दो। इसके बदलेमें तुम कल मेरे क्रिकेट बैटसे मैचमें खेल लेना।

मनोहर : मंजूर (**जेब से सवा रुपया निकालकर जमा करता है**); अब हुए सात रुपए पचास पैसे। सवा रुपएकी अभी भी कमी है। बोलो, किसने नहीं दिया है?

(सब बच्चे चुपचाप एक दूसरेका मुंह देखते हैं।)

मनोहर : देखो, भई, यह गलत बात है, बेईमानी नहीं करनी चाहिए।

कुंकुम : मनोहर, तुमने खुद अपना सवा रुपया जमा कर लिया?

मनोहर : ऐं. . .! (**मुसकराकर**) धत् तेरेकी!

(सब बच्चे हंसते हैं। मनोहर अपनी जेबसे सवा रुपया निकलकर जमा करता है।)

मनोहर : अच्छा, अब कुछ मेजें एक लाइनमें लगा दो। इनके पीछे कुर्सियोंपर बैंकमें काम करने वाले बच्चे बैठेंगे और सामनेसे बाकी बच्चे रुपया निकालने या जमा करने आएंगे।

(सब बच्चे दाएं दरवाजेसे मेजें और कुर्सियां उठाकर लाते हैं और उन्हें कमरेके बीचमें एक लाइनमें लगा देते हैं। सोफा एक तरफ कर देते हैं।)

श्याम : लो, भई, मेज-कुर्सियां लग गईं। अब क्या करें?

मनोहर : श्याम, तुम तो बन जाओ कैशियर यानी जो बच्चे बैंकमें रुपए जमा कराने आएंगे, तुम उनसे रुपया लेना।

श्याम : यह तो बहुत बढ़िया काम है, मुझे मंजूर है।

मनोहर : और, चंदू, तुम बन जाओ रुपया देने वाले।

चंदू : अच्छी बात है।

मनोहर : कुंकुम, मुन्नू, पप्पू और सुधा—तुम सब रुपया जमा करने या निकालने वाले बन जाओ। अपनी नोट-बुकका इस्तेमाल चेककी जगह करो। ठीक?

(सब बच्चे 'ठीक है' जोरसे कहते हैं। चंदू, मनोहर और श्याम मेजके पीछे कुर्सियोंपर बैठते हैं। कुंकुम मुन्नू, पप्पू और सुधा दाएं दरवाजेसे बाहर चले जाते हैं। मुन्नू फिर उसी दरवाजेसे अंदर आता है।)

मुन्नू : चंदू, मुझे एक रुपया दे दो।

चंदू : बैंकमें जिसका हिसाब होता है, वही रुपया निकाल सकता है। पहले बैंकमें कमसे कम सवा रुपया जमा करो।

मुन्नू : मैं जमा तो कर चुका हूं।

चंदू : वह तो पूंजी है।

मुन्नू : तो क्या हुआ? मेरी पूंजी है—मैं ही निकाल रहा हूं।

चंदू : तुम मैनेजर साहबसे बात कर लो।

(मुन्नू मनोहरके पास जाता है।)

मुन्नू : मैनेजर साहब, मैंने जो सवा रुपया जमा किया था, मैं उसे क्यों नहीं निकाल सकता?

मनोहर : निकाल तो सकते हो, पर इसी तरह सभी डायरेक्टर अपनी पूंजी निकाल लेंगे, तो बैंक कैसे चलेगा?

मुन्नू : औरोंको मत निकालने देना, पर मुझे सवा रुपएकी बहुत सख्त जरूरत है।

मनोहर : तुम्हारी मर्जी; चंदू, दे दो इसे सवा रुपया। बादमें जो होगा देखा जाएगा।

(मुन्नू चंदूके पास जाता है। उसे चेक देता है। चंदू सवा रुपया देता है। मुन्नू बाहर चला जाता है। कुंकुम दाएं दरवाजेसे अंदर आती है।)

कुंकुम : श्याम, मेरे पांच रुपए जमा कर लो।

श्याम : लाओ, बोहनी तो हुई। मैं तो इतनी देरसे बैठा मक्खी ही मार रहा था।

कुंकुम : कितनी मक्खी मार लीं?

श्याम : सौ तो मार ही ली होंगी।

कुंकुम : इन्हें अपने हिसाबमें बैंकमें जमा कर लो!

मनोहर : इस बैंकमें मक्खियां जमा नहीं होतीं, रुपए जमा होते हैं।

कुंकुम : मैंने अभी पांच रुपए जमा किए हैं। मुझे कितना सूद मिलेगा?

मनोहर : चार प्रतिशत।

कुंकुम : यानी सौ रुपएपर चार रुपए?

मनोहर : हां, वह भी एक साल बाद।

कुंकुम : यह कायदा हमारे बैंकमें नहीं चलेगा।

मनोहर : सभी बैंकोंका यही कायदा है। सेविंग अकाउंटमें चार प्रतिशत सूद मिलता है, फिक्स्ड अकाउंटमें छह-सात प्रतिशत और करेंटमें तो उल्टे कुछ कट ही जाता है।

कुंकुम : मैं इन दुनिया भरके अकाउंटोंके झगड़ेमें नहीं पड़ती। हमारे बैंकमें बस एक ही अकाउंट चलेगा।

मनोहर : कौन-सा अकाउंट?

कुंकुम : तुरंत अकाउंट!

मनोहर : वह क्या होता है?

कुंकुम : इस अकाउंटमें एक रुपएपर एक दिनमें एक रुपया सूद तुरंत मिलेगा।

मनोहर : लेकिन . . .

कुंकुम : लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, हमारे बैंकमें ऐसा ही होगा।

श्याम : मैनेजर साहब, क्या हुक्म है? तुरंत अकाउंटमें कुंकुमके पांच रुपए जमा कर लूं?

मनोहर : कर लो—और चारा ही क्या है?

श्याम : कुंकुम, हो गए तुम्हारे पांच रुपए तुरंत

लेखक-परिचय

नाम : स्वदेशकुमार; **जन्म :** १३ जून १९२१ ई.
शिक्षा : एम. ए. (इतिहास)।

श्री स्वदेशकुमारका दूसरा पारिवारिक नाम है परमेश्वरप्रसाद सक्सेना, लेकिन उसपर सरकारका काफी राइट है। लगभग ११ वर्ष 'सरिता' में सहकारी संपादक रहे, फिर उसी कंपनीके जनरल मैनेजर हो गए। सैकड़ों कहानियां प्रकाशित, टेलीविजन और रेडियोके प्रमुख लेखक, रंगमंचके अभिनेता और गुलाब उगानेके विशेषज्ञ रहे हैं। बाल एकांकी संग्रह हैं—'राहुल', 'पांच वर्ष', 'नवभारतके निर्माता', 'स्वतंत्रताके सेनानी' तथा बाल कथा-संग्रह : 'चींटीका बदला' व 'गुलेल के टुकड़े'। पता है : **आर १९, हौज खास एन्क्लेव, नई दिल्ली दिल्ली–१६।**

अकाउंटमें जमा।

कुंकुम : अच्छा, तो अब दस रुपए लाओ।

श्याम : वह चंदू से लो।

कुंकुम : चंदूसे क्यों लूं? रुपए तो मैंने तुम्हें दिए हैं।

श्याम : मैं रुपए लेने वाला हूं, चंदू रुपए देने वाला। बैंकका ऐसा ही कायदा होता है।

कुंकुम : चलो, कोई बात नहीं, यह कायदा हमारे बैंकमें भी चल सकता है। **(चंदू के पास जाकर)** लाओ, भई चंदू, दस रुपए निकालो।

चंदू : आज नहीं मिल सकते।

कुंकुम : क्यों?

चंदू : दस रुपए निकालनेके लिए तुम्हें बैंकको एक हफ्तेका नोटिस देना पड़ेगा। आखिर इतनी बड़ी रकमका इंतजाम करनेके लिए हमें कुछ समय चाहिए या नहीं?

कुंकुम : यह नोटिस-वोटिसका झंझट मुझे पसंद नहीं है। रुपया मुझे अभी चाहिए, नहीं तो मैं अपना शेयर वापस ले लूंगी।

चंदू : तुम मैनेजर साहबसे बात कर लो।

मैनेजर : दे दे, भई, बच्चोंके बैंकमें उनके बनाए कायदे ही चलेंगे।

चंदू : अच्छी बात है।

कुंकुम : लाओ जल्दी करो। मुझे फौरन जाकर गुड़िया खरीदनी है।

चंदू : दे तो रहा हूं। यह लो। गिन लो, बादमें मैं जिम्मेदार नहीं हूं।

कुंकुम : गिननेका मेरे पास समय नहीं है। दूकानदार कम बताएगा, तो आकर बाकीके ले जाऊंगी।

(कुंकुम जल्दीसे बाहर जाती है।)

मनोहर : ऐसे दो चार बच्चे और आ गए, तो मुझे तो बुखार चढ़ जाएगा। सिरमें दर्द तो अभी हो गया। अच्छा, भई, मैं तो थोड़ी देर सो लूं; तबीअत ठीक हो जाएगी। तुम दोनों काम संभाल लेना।

चंदू : आप कोई चिंता न करें, मैनेजर साहब।

(मनोहर कुर्सीपर बैठा बैठा खर्राटे भरने लगता है।)

श्याम : चंदू, हमने ही क्या कसूर किया है? हम दोनों भी थोड़ी देर क्यों न सो लें?

चंदू : अच्छा विचार है।

(चंदू और श्याम भी खर्राटे भरने लगते हैं। पप्पू और सुधा दाएं दरवाजेसे अंदर आते हैं।)

पप्पू : अरे, यह बैंक है या बच्चोंकी नर्सरी? जिसे देखो वह सो रहा है। उठो, भई, मुझे फौरन एक रुपया चाहिए। बाहर चाटवाला मेरा इंतजार कर रहा है। ऐ सोने वालो, जागो!

चंदू (जागकर उनींदा-सा) : ऐ जागने वाले सो जाओ **(फिर खर्राटे भरने लगता है।)**।

पप्पू : अजीब मुसीबत है।

चंदू (फिर जागकर) : कोई मुसीबत नहीं है। यह बैंक हमारा है, जो हम चाहेंगे यहां वही होगा। इस समय हमें नींद आ रही है। तुम थोड़ी देर बाद आना।

पप्पू : अरे, ऐसा गजब न करो; मुझे चाट खानी है।

चंदू : शोर मत मचाओ।

पप्पू : मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूं मुझे एक रुपया दे दो। फिर सो जाना।

चंदू : अच्छा, एक शर्त पर दे सकता हूं —मेरे लिए भी चाट लानी पड़ेगी।

पप्पू : मुझे मंजूर है। लाओ पैसे निकालो जल्दी।

चंदू : लेकिन चेक तो दो मुझे।

पप्पू : मेरी चेक बुक तो कुंकुम अपने साथ ले गई।

चंदू : फिर मैं पैसे कैसे दे सकता हूं?

पप्पू : चेक मैं कल दे दूंगा।

चंदू : ऐसा कायदा नहीं है।

पप्पू : अरे, कायदेको मारो गोली। हमारे बैंकमें वही कायदा चलेगा, जिसमें काम आसानीसे हो।

चंदू : एक शर्तपर। मेरे लिए भी पचास पैसेकी चाट ले आना।

पप्पू : लाओ अपने पचास पैसे और मेरा एक रुपया।

श्याम (जागकर) : अकेले ही अकेले चाट खानेका प्रोग्राम बन रहा है! चंदू, मेरे लिए भी एक रुपएकी चाट मंगवाओ।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

ज्ञान और लाभके लिए टिकट-संग्रह

— गुरुचरणसिंह बोहरा

बहुतसे बच्चोंको टिकट-संग्रह करनेका शौक होता है। इनमेंसे कई एकके संग्रह बहुत अच्छे होते हैं और वे गर्वके साथ उन्हें दूसरोंको दिखाते हैं। देखने वाले भी मुग्ध होकर प्रायः कह देते हैं—'हां, भई पप्पू, तुम्हारा संग्रह तो बहुत बढ़िया है, परंतु यह तो बताओ, यह सब जमा करनेसे तुम्हें लाभ क्या है?'

पप्पू भाई जो अपनी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न हो रहे होते हैं, इस अटपटे प्रश्नसे अचकचाकर सिर खुजाने लगते हैं : 'लाभ! लाभ क्या होगा? मेरा तो पूरा जेब-खर्च ही टिकटोंकी भेंट चढ़ जाता है!'

पूरा जेब-खर्च टिकटोंकी भेंट चढ़ जानेकी बात स्मरण करके पप्पू भाई कुछ उदास भी हो जाते हैं।

जेब-खर्च तो खर्च करनेके लिए ही मिलता है। चाहे उसे टाफियां और अल्लम-गल्लम खाकर दांत और पेट खराब करनेके लिए खर्च करो, चाहे टिकटोंमें लगाकर अपनी पूंजी बना लो।

अवकाशकी घड़ियोंके सदुपयोग और 'नकद प्रसन्नता-लाभ' के लिए टिकट-संग्रहसे बढ़कर कोई दूसरा शौक नहीं। इसी लिए इसे शौकोंका राजा कहा जाता है।

टिकट-संग्रह करना बड़ों और बच्चों दोनोंके लिए लाभदायक है। टिकट-संग्रही बच्चोंका ज्ञान सामान्य बच्चोंसे कहीं अधिक होता है। उन्हें भूगोल, इतिहास, नए नए आविष्कारों, अनेक देशोंमें हो रही प्रगति, विभिन्न देशोंके पहनावे, रीति-रिवाज, पशु-पक्षी, फल-फूल आदि अनेक विषयोंका ज्ञान टिकट देख देखकर सहज ही में प्राप्त हो जाता है।

कारण, कोई ऐसा विषय नहीं जिसका चित्रण डाक-टिकटोंपर न हुआ हो। भारतके टिकटोंको ही लीजिए। स्वतंत्रता-प्राप्तिके पश्चात् डाक-तार विभागने भारतके ऐतिहासिक, धार्मिक एवं दर्शनीय स्थानों, संतों, कवियों, धार्मिक एवं राजनीतिक नेताओं, जंगली जीवों, तथा औद्योगिक विकास आदिको विषय बनाकर अनेकों टिकट छापे हैं।

नेशिया : (१९) रामायण नृत्य (हनुमान), (२०) प्राम्बनान मंदिर; **मालदीव और श्रीलंका :** (२१-२२) नारियल; **हंगरी :** (२३) शिकारी पक्षी, (९) घोरनी बच्चों के साथ, (११) मछली, (१६) विश्व फुटबाल चैम्पियनशिप चिली—१९६२ (कोलम्बिया और उरुग्वायके राष्ट्र-ध्वज); **इक्वेडोर :** (२४) तितली; **जापान :** (१०) शेर (इजूमो शिलौना—जापान प्रतिवर्ष नए वर्षके बधाई टिकट निकालता है, जिनपर जीव-जंतुओं, शिलौनों आदिके चित्र रहते हैं) **रोमानिया :** (१५) जलपोत।

जिन बच्चोंने इन टिकटोंको देखा अथवा संग्रह किया है, उनके ज्ञानमें निश्चय ही वृद्धि हुई है। संसार भरके देश विभिन्न विषयों के टिकट आए दिन छापते रहते हैं। भारतीय टिकट तो तुमने बहुत देखे होंगे। यहां आमने-सामनेके पृष्ठोंपर विभिन्न देशोंके डाक-टिकट दिए जा रहे हैं, जिनका परिचय इस प्रकार है :

रूस : (१) लेनिन, (२) जवाहरलाल नेहरू, (३) अंतरिक्ष-यात्री तितोव और स्पुतनिक यान 'पूर्व-२'; **चैकोस्लोवाकिया :** (४) फूल; **अमरीका :** (५) बालिकाओंका कैंप फायर (एण्ड्रयू कार्नेगी स्मारक टिकट), (६) गृह-निर्माण; **आस्ट्रेलिया :** (७) आदिवासी, (८) क्रिसमस; **न्यूजीलैंड :** (१२, १३, १४) विविध फूल; **पूर्वी जर्मनी :** (१७) बच्चोंके टेलीविजन कार्यक्रम (फ्लैक्स, फ्लेमेल और स्ट्रूपी नामक कुत्ता); **भूटान :** (१८) नर्तक; **इण्डो-**

विश्वभरमें प्रतिवर्ष हजारों प्रकारके नए टिकट छपते हैं, अतः सब टिकट जमा कर सकना संभव नहीं। संग्रही अपनी रुचिके विषयों अथवा देशोंका चयन करके संग्रह करते हैं। जहां तक संभव हो प्रत्येक मालाके अंतर्गत छपे हुए पूरे टिकट लेने चाहिएं, एक माला चाहे दो

Prashant Kumar near state

डैडी, आप कह रहे थे बैंक में धन बढ़ता है। यह कैसे होता है ?

मेरी ही तरह अनेक व्यक्ति बैंक में अपना रुपया जमा रखते हैं। बैंक में बहुत सा रुपया इकट्ठा हो जाता है। उस रुपये को बैंक दुकानदारों, कारखानों और सरकार को उधार दे देती है। कुछ समय बाद बैंक को अपना रुपया ब्याज सहित वापस मिल जाता है क्योंकि बैंक हमारे रुपये का उपयोग करती है, इसलिए उसमें से कुछ ब्याज हमें भी दे देती हैं। इससे हमारा रुपया बढ़ता है। यदि हम रुपये को बैंक में जमा न करेंगे, तो वह कैसे बढ़ेगा ?

ठीक है। आप अपना रुपया तो पंजाब नेशनल बैंक में ही जमा रखते हैं ना ?

हाँ, बेटा। वही मेरा बैंक है। यह देश के सबसे पुराने और सबसे बड़े बैंकों में से एक है। देश भर में इसकी ४७५ से अधिक शाखाएं हैं।

पंजाब नेशनल बैंक

PR-PNB-8602 H

bank - Bijnor.

टिकटोंकी हो या बारहकी।

ज्ञान उपार्जनके साथ साथ टिकट-संग्रही बच्चे धनका अपव्यय करनेसे बच जाते हैं। टिकट खरीदनेमें जो पैसा लगता है वह कभी व्यर्थ नहीं जाता। कुछ ही वर्षोंमें उन टिकटोंकी कीमत कई गुना बढ़ जाती है। यदि भाग्यसे कोई दुष्प्राप्य या गल्तीवाला टिकट हाथ लग जाए, तो फिर कहना ही क्या!

हर नया टिकट पानेपर संग्रहीको अपार प्रसन्नता होती है। अभी तक संग्रह न करने वाले बच्चोंमेंसे यदि कोई आजसे संग्रह करना आरंभ कर दे और पांच-सात वर्ष तक शनैः शनैः अपना संग्रह बढ़ाता रहे, तो उस अवधिके पश्चात् उसे अपना एल्बम देखकर हैरानी होगी कि इतने प्रकारके देश-विदेशके असंख्य टिकट कैसे जुट गए हैं।

अभी जो टिकट सस्ते दामोंमें प्राप्य हैं, कुछ वर्षों बाद उनकी कीमत भी कई गुना बढ़ चुकी होगी। परंतु एक बात अवश्य याद रखें; जो भी नया टिकट प्राप्त हो, उसके संबंधमें अधिक से अधिक जाननेका प्रयत्न करें। जिज्ञासुके लिए जानना कुछ भी कठिन नहीं। ●

तुरंत अकाउंट (पृष्ठ १५ से आगे)

(चंदू मेजकी दराजमेंसे ढाई रुपए निकालकर पप्पूको देता है। पप्पू बाहर चला जाता है।)

सुधा : मैं बहुत देरसे खड़ी हूं। मेरा चेक भुना दो।

चंदू : खड़ी हो, तो मैं क्या करूं? देख नहीं रही हो मैं काम कर रहा हूं?

सुधा : अच्छा, अब तो काम खतम हो गया?

चंदू : अभी नहीं हुआ। जब तक मैं चाट नहीं खा लूंगा, तुम्हारा चेक नहीं भुनाऊंगा।

सुधा : मैं मैनेजरसे तुम्हारी शिकायत कर दूंगी।

चंदू : कर दो। मैं कोई डरता हूं उनसे!

सुधा : तुम्हारी नौकरी चली जाएगी।

चंदू : नौकरी? यह बच्चोंका सहकारी बैंक है। यहां कोई किसीका नौकर नहीं है।

सुधा (नरम पड़ कर) : मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं, चंदू भाई, मेरा चेक भुना दो। मुझे जल्दी है।

चंदू : अच्छा, लाओ चेक दिखाओ।

सुधा : यह लो।

चंदू : लेकिन यह तो अकाउंट पेई है।

सुधा : उससे क्या हुआ।

चंदू : कैसी बेवकूफ लड़कीसे पाला पड़ा है! अरे, जिस चेकपर अकाउंट पेई लिखा होता है उसके माने होते हैं कि केवल उसी आदमीके हिसाबमें रुपया जमा हो सकता है, जिसके नाम चेक है। इसी तरह क्रास चेक होता है, जिसका रुपया नकद नहीं मिल सकता, पहले अपने हिसाबमें जमा कराना पड़ता है। हां, अगर बिअरर चेक हो, तो नकद रुपया मिल सकता है।

सुधा : तुमने जो यह अकाउंट पेई, क्रास और बिअरर का झगड़ा लगा दिया है—यह यहां नहीं चलेगा। समझे?

चंदू : समझ गया।

सुधा : तो चुपकेसे चेक भुना दो।

चंदू : अच्छा, बाबा, भुना देता हूं।

सुधा : हां, अब की न तुमने कायदेकी बात।

चंदू : लेकिन कायदा क्या करेगा—मेरे पास तो अब एक भी पैसा नहीं रहा।

सुधा : मैं कुछ नहीं जानती मुझे रुपए चाहिएं।

चंदू : यह बैंक है—टकसाल नहीं, जो चटसे रुपए बना दूंगा।

सुधा (तेज होकर) : कहींसे दो, मुझे रुपए चाहिएं।

चंदू (और भी तेज होकर) : नहीं देता, कर लो जो तुम्हारा जी चाहे!

सुधा (और जोरसे) : अच्छा, यह बात है!

चंदू (और जोरसे) : हां, यही बात है।

(शोर सुनकर मनोहर आ जाता है।)

मनोहर : क्या बात है? यह शोर क्यों मचा रखा है?

सुधा : चंदू, मेरा चेक नहीं भुनाता।

चंदू : कहांसे भुना दूं? पास तो पैसा भी नहीं।

मनोहर : क्या बैंकमें रुपए खतम हो गए?

चंदू : खतम नहीं होंगे, तो क्या होगा?

मनोहर : ठहरो, मैं अभी हिसाब देखता हूं। श्याम, आज कितने रुपए जमा हुए?

श्याम : आठ रुपए पिच्हत्तर पैसे पूंजीके और पांच कुंकुमके अकाउंटके। कुल तेरह रुपए पिच्हत्तर पैसे।

मनोहर : और, चंदू, तुमने कितने रुपए दिए?

चंदू : तेरह रुपए पिच्हत्तर पैसे।

मनोहर : यानी जितने जमा हुए उतने दे दिए। अच्छा, तो एक काम करो। ऐलान करवा दो कि बैंकका दीवाला निकल गया।

सुधा (परेशान) : बैंकका दीवाला निकल गया?

मनोहर : नहीं निकलेगा, तो और क्या होगा?

सुधा : तो अब क्या किया जाए?

मनोहर : तुम बच्चोंको जेब-खर्चके लिए जो भी पैसे मिलें, वह बैंकमें जमा कर दो और निकालनेका नाम भी न लो। कुछ दिनोंमें हमारे बैंकमें ढेर सारे रुपए हो जाएंगे।

सुधा : लेकिन बैंकमें जमा करनेसे क्या फायदा, जब हम उन्हें खर्च ही नहीं कर सकते?

मनोहर : फिजूल-खर्चीका जमाना नहीं है। एक एक पैसा जमा होते होते हजारों, करोड़ों पैसे बैंकमें जमा हो जाएंगे। वे पैसे हम चाचा नेहरू स्मारक कोषमें दे देंगे ताकि देशके बच्चोंकी उन्नतिकी किसी योजनामें काम आ सकें।

(पर्दा गिरता है।) ●

अब तक तुमने पढ़ा था—

सरकसका मालिक कोमन अपने जानवरोंको बहुत प्यार करता था। जानवर भी उसे जी-जानसे चाहते थे लेकिन सरकसके बेईमान मैनेजर केलनने कंपनीका दीवाला निकाल दिया और स्वयं उसका मालिक बन बैठा। कोमनको अपने जानवर लेकर कंपनीसे चले जाना पड़ा। उसने एक नया सरकस खड़ा करनेका संकल्प किया, लेकिन उसके पूरा होनेसे पहले ही वह चल बसा।

एक दिन कोमनकी एक पुरानी वसीयतके अनुसार केलनने जानवरोंको एक महीनेमें मकान खाली कर देनेकी धमकी दी। उसी रात जानवरोंके नेता वानर चिम्पनको कोमन सपनेमें दिखाई दिया। इसीसे प्रेरणा पाकर वह जानवरोंका एक अलग सरकस खड़ा करनेमें जुट गया।

सरकसका उद्घाटन हुआ और बच्चोंने इसे बहुत पसंद भी किया। जानवरोंके करतबोंकी धूम सुनकर एक दिन कण्णन और कुञ्जाप्पू आठ मील पैदल चलकर उसे देखने आए। कुञ्जाप्पूके मनमें सरकसमें काम करनेकी इच्छा हुई, पर वह तो चाप्पन नामक एक निर्दयी व्यक्तिके चंगुलमें था।

उधर सरकस एक स्थानसे दूसरे स्थान घूम रहा था। जानवर काम करते करते थक गए थे। अतः चिम्पनने कुछ पालतू जानवरोंको अपने सरकसमें ले लिया, जिनमें कुञ्जाप्पूका कुत्ता बेलुम्पन भी था।

उन्हीं दिनों केलन जानवरोंके सरकसके विरुद्ध तरह तरहका प्रचार कर रहा था। जम्बू और ऊंट सबको डराकर केलनके सरकसमें मिलनेकी बात उठा रहे थे। पर इसी बीच केलनके अपने सरकसकी माली हालत बदसे बदतर हो गई थी। इस परेशानीसे बचनेके लिए वह अपने वकीलके साथ कमरेमें बैठा जम्बूकी बाट जोह रहा था। तभी बाहर किसीकी पदचाप सुनाई पड़ी।

लो, अब इससे आगे पढ़ो :

(४)

केलनने दरवाजा खोला। जम्बूके सिवाय और कौन हो सकता था; केलनकी खुशीका ठिकाना न रहा। उसने लोमड़को गले लगाया: "तुम्हारी बड़ी लंबी उम्र है, मेरे प्यारे जम्बू, हम अभी अभी तुम्हारे बारेमें ही बात कर रहे थे और तुम आ गए। तुम्हें देखकर मुझे बहुत खुशी हुई, दोस्त!"

तभी अंदर आना," केलनने कहा।

घंटेने दस बजाए। फिर ग्यारह बजाए। केलन और जम्बू बात करते रहे, करते रहे। चाप्पन अपने मालिकको अच्छी तरह जानता था। उसके सहज ज्ञानने उसे बताया कि केलन कोई षड्यंत्र रच रहा है। इसमें उसे भी कोई न कोई भूमिका निभानी ही होगी। पहले भी हमेशा

फिर केलन वकीलकी तरफ मुड़ा: "चाप्पनसे घंटे भरमें हमारे लिए खाना लानेको कह दीजिए। मुर्गी न तो तली जाएगी और न भूनी जाएगी। जम्बू खुद उन्हें मारकर कच्चा चबाएगा। और आप, वकील साहब, हमें अकेला छोड़ दीजिए। हमें कुछ जरूरी बातें करनी हैं, जाइए।" वकील साहब चले गए।

घंटेभर बाद चाप्पनने दरवाजा खोला और खाना लेकर आया। लोमड़को देखकर मुर्गियां डरसे चिल्लाईं। जम्बूने उनपर झपट्टा मारा और जरा देर बाद वे रोने-चीखनेके लिए जीवित नहीं रहीं।

"चाप्पन, बाहरका ध्यान रखना और जब मैं पुकारूं,

ऐसा होता रहा है। वह नया षड्यंत्र जाननेके लिए बेचैन था। उसने जरा-सा दरवाजा खोला और सुना:

केलन : अच्छा तो हमें इसी तरह यह काम करना चाहिए।

जम्बू : हां, इसके बाद वे रास्तेपर आ जाएंगे।

केलन : क्या तुम्हें विश्वास है?

जम्बू : हां, मुझे पूरा विश्वास है।

केलन : कारण?

जम्बू : चिम्पनके बिना वे कुछ नहीं कर सकते।

केलन : तुम्हारा मतलब है, वे इतनी आसानीसे जालमें फंस जाएंगे?

जम्बू : बेशक।

केलन : बादमें हम दोनों मिलकर काम करेंगे।

जम्बू : आप इस देशमें सबसे बढ़िया सरकसके मालिक के रूपमें—

केलन : —और तुम उसके मैनेजरके रूपमें।

जम्बू : मैं यह साबित करके दिखा दूंगा कि एक लोमड़ भी सरकस चला सकता है।

केलन : हां, अगर एक बंदर चला सकता है, तो लोमड़ क्यों नहीं चला सकता?

और वे दोनों मन-ही-मन हंसे।

जम्बूने अपना सफरी झोला खोला और उसमेंसे नोटोंकी एक गड्डी निकाली : "यह आपके लिए है, केलन साहब, इसे भेंट समझकर स्वीकार कीजिए।"

केलनने जम्बूको गले लगाया : "मुझे यह बतानेकी जरूरत नहीं कि मैं तुम्हारा कितना अहसानमंद हूं, जम्बू। मुझे आशा है कि तुम बहुत जल्द मेरे सरकसके मैनेजर बनोगे।"

जम्बूके अपने अलग विचार थे, लेकिन उसने उन्हें अपने तक रखा। वह भविष्यके लिए तैयारी कर रहा था। अभी तक जानवर जमीन-जायदाद नहीं बना सकते थे, बैंकमें अपना खाता नहीं खोल सकते थे। जंगली जानवरों-को भले ही इन बातोंकी परवाह न हो क्योंकि वे जंगल में रहते थे, लेकिन पालतू जानवर और सरकसके जानवर तो इंसानोंके बीच रहते हैं, उनके आसपास घूमते-फिरते हैं। जम्बूको इस बातका विश्वास था कि एक दिन वे अपने अधिकारोंके लिए दावा करेंगे और अपने अधिकार पा जाएंगे। उस समय उसे उनका नेता होनेकी आशा थी। सरकसका मैनेजर होना इस दिशामें उसका पहला कदम था।

"सुनो, केलन साहब, मैं एक ऐसा आदमी चाहता हूं, जो मेरी आज्ञाका पालन करे और सवाल बिल्कुल न करे, जिसमें शक्ति और साहस हो और जिसमें आत्मा नामकी कोई चीज न हो। मुझे एक ऐसा आदमी दे दीजिए और बाकी सब मुझपर छोड़ दीजिए," जम्बूने कहा।

"यह तो बड़ा आसान है। यहां मेरे पास ये सब गुण रखने वाला एक आदमी है," केलनने मुसकराते हुए कहा और चाप्पनको पुकारा।

चाप्पन अंदर आया। जम्बूने उसे गौरसे देखा। सचमुच यह एक ऐसा आदमी था, जो उसकी कल्पनासे भी ज्यादा भयंकर था।

"चाप्पन, जम्बू तुम्हें दो काम करनेको देगा। ये काम मेरे दुश्मनोंको तबाह करनेके लिए हैं," केलनने सूचित किया।

"बस दो, मालिक! दस भी नहीं?" चाप्पनने पूछा जो स्पष्ट रूपसे निराश हो गया था।

केलन जम्बूकी ओर देखकर और जम्बू केलनकी

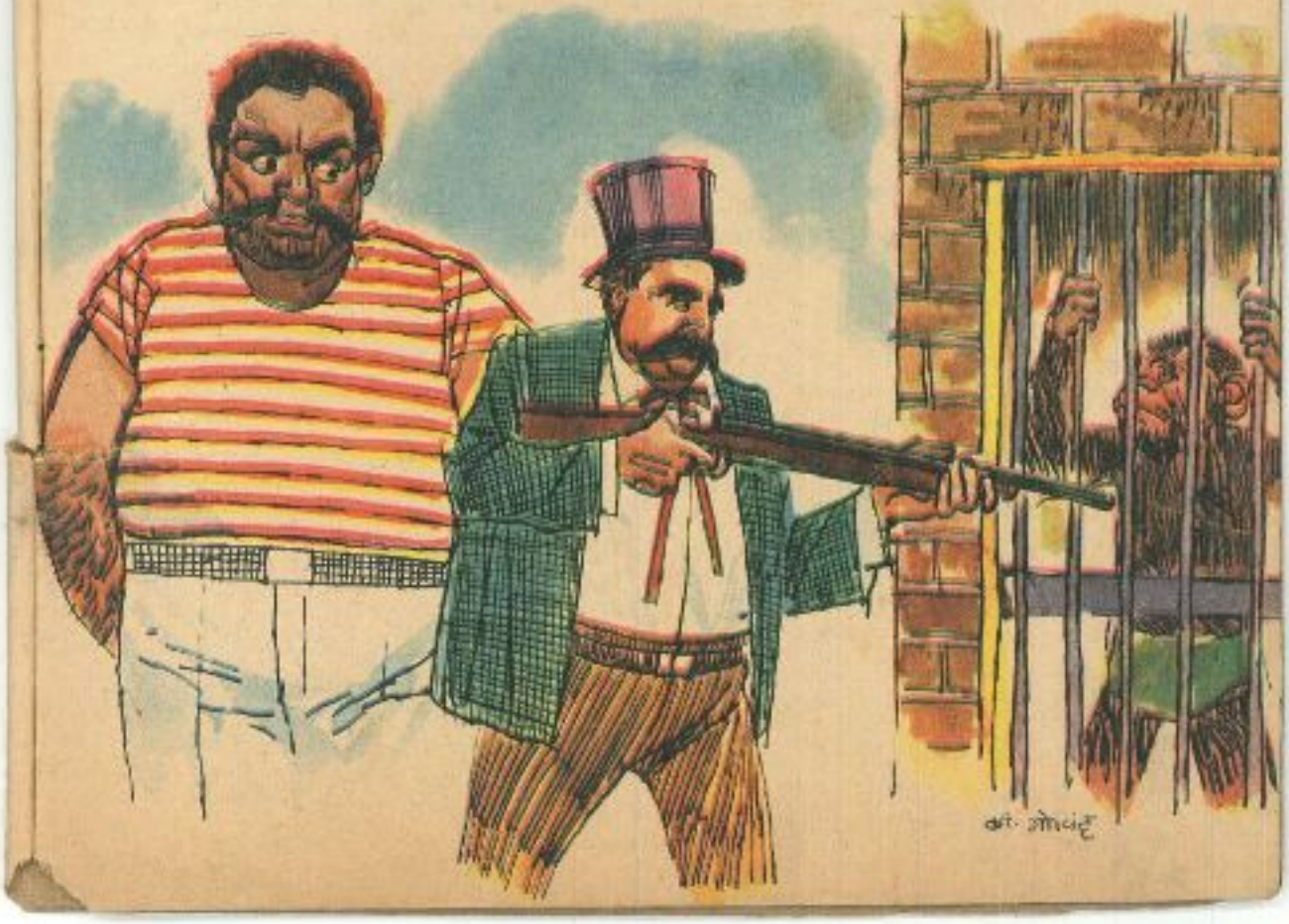

और देखकर मुसकराया और फिर वे दोनों खिलखिलाकर हंस पड़े।

जब जानवरोंका सरकस कब्लममें था, तो उसकी पहली वर्षगांठ आई। यह शुभ अवसर मनानेके लिए विशेष खेल-तमाशेका आयोजन किया गया। तमाशेमें नए नए करतब जोड़े गए, टिकट आधी दरोंपर बेचे गए, लेमोनेड, चाकलेट और काजू बांटे गए। इसलिए तम्बूमें पहलेसे भी ज्यादा भीड़-भड़क्का था। खेल शुरू होनेसे पहले ही सारी जगह भर चुकी थी। रत्ती भर जगह खाली नहीं थी।

सबसे पहले घेरेमें चिम्पन आया। वह गंभीर स्वरमें बोला, "मैं अपने स्वर्गीय मालिक कोमन साहबके आशीर्वादकी कामना करता हूं। उन्होंने हमें सरकसके करतब सिखाए, हमारी देखभाल की, हमें अपने बच्चोंकी तरह प्यार किया। हमारा सब कुछ उनका है। वह अब जीवित नहीं है, लेकिन उनकी आत्मा हमारे साथ है। दोस्तो, एक मिनिटके लिए खड़े हो जाओ और उनकी आत्माकी शांतिके लिए प्रार्थना करो।"

भीड़ खड़ी हो गई और लोगोंने सिर झुका लिये। फिर उन्होंने एक मिनिट तक मौन रहकर प्रार्थना की।

इसके बाद तमाशा शुरू हुआ। सबसे पहले चिड़िया अपनी चोंचोंमें स्वागतकी पताका दबाए घेरेके इर्द-गिर्द धीरे धीरे उड़ी। बैंड-बाजा आधी दर्जन बिल्लियोंने बजाया। इसके बाद एक जवान और खूबसूरत सफेद सांड घेरेमें आया। उसने जनताका अभिवादन किया और फिर ताड़के पत्तेसे बने हुए टोपको ऊंचाईपर उछाला। टोपने बाईं ओरसे दाईं ओर तम्बूका चक्कर लगाया, फिर जहांसे चला था वहीं लौट आया और ठीक सांडके सींगोंपर आकर टिक गया। फिर उसने उस टोपको दाईं ओरसे बाईं ओरको उछाला। इसके बाद उसने पांच टोप दोनों दिशाओंमें फेंके। टोपोंको हवामें चक्कर काटते और फिर सांडके सींगोंपर एकके ऊपर एक टिकते देखनेमें बड़ा मजा आया। फिर छह मादा राजहंस नीली स्कर्ट और लाल ब्लाउज पहने सामने आईं। उन्होंने रस्सियोंपर अपने पांव टिकाए और फिर बड़े बड़े हरे छाते संभाले। वे लय और तालपर उछलीं—नाचीं। फिर मसखरा आया। वह एक विनोदी गधा था। वह पूरे पंद्रह मिनिट तक दर्शकोंको हंसा हंसाकर लोटपोट करता रहा।

वेलुम्पन कुत्ता बहुत अच्छा बाजीगर था, लेकिन आज उसे मोटर साइकिलपर कुछ करतब दिखाने थे। वह अपना करतब शुरू करनेही वाला था कि अचानक रुक गया और कुछ सूंघने लगा।

"वेलुम्पन, समय नष्ट मत करो," चिम्पनने कहा।

"मुझे एक दुष्ट आदमीकी गंध आ रही है। यह जानी-पहचानी गंध है," वेलुम्पनने सूंघते हुए कहा।

"ऐसे ही खयाल मत दौड़ाओ। चलो, शुरू करो," चिम्पनने कुछ अधीर होकर कहा।

"मुझे विश्वास है, पूर्वी दिशामें एक दुष्ट आदमी है और वह हमें नुकसान पहुंचानेके लिए आया है। जरा ठहरो, चिम्पन, मैं अभी उसका पता लगाकर आता हूं वरना बहुत देर हो जाएगी," वेलुम्पनने गंभीरतापूर्वक कहा।

जम्बू पास खड़ा यह सब सुन रहा था। उसने अब दखल देते हुए कहा, "चिम्पन, वेलुम्पन यह घेरा छोड़कर नहीं जा सकता। लोग पहले ही बड़बड़ा रहे हैं। इसकी जगह मैं जाता हूं और अगर वहां सचमुच कोई दुष्ट आदमी है, तो उसका पता लगाता हूं।" और जवाबका इंतजार किए बिना लोमड़ जल्दीसे बाहर चला गया।

लोगोंको कुत्तेके करतब पसंद नहीं आए; क्योंकि वह सूंघ बहुत ज्यादा रहा था और मोटर साइकिलपर कम सवारी कर रहा था। उन्होंने चाहा कि कुत्तेका खेल खत्म हो और जब कुत्तेका खेल खत्म हो गया, तो उन्होंने चैनकी सांस ली। इसके बाद शेरका करतब शुरू होना था। यह वह करतब था जो पहले गजब दिखाया करता था।

खेल खत्म होनेपर वेलुम्पन घेरा छोड़कर दुष्ट आदमीका पता लगाने चला गया होता, लेकिन उसे सिंहनके पंजेपर प्याले और तश्तरियां रखनेका काम सौंपा गया था। इसलिए उसे मजबूर होकर रुकना पड़ा। शेर पहले ही तारपर पहुंच गया था। शोर बंद हो चुका था और सबकी निगाहें उसपर टिकी हुई थीं।

"आग!" एक तेज और बारीक आवाजने उस खामोशीको चीरा।

हां, तम्बूकी पूर्वी दिशामें आग लग गई थी। फौरन भगदड़ मच गई और लोग पश्चिम दिशाकी ओर दौड़े। उधर बाहर जानेका एकमात्र रास्ता संकरा था। भयंकर हड़बड़ी मची हुई थी। भयभीत और हड़बड़ाए हुए माता-पिता अपने बच्चोंको और बच्चे अपने माता-पिताओंको ढूंढ़ रहे थे। वे एक-दूसरेको ढूंढ़ नहीं पाए और भीड़में धकेल दिए गए। उन्होंने अपनोंको पुकारा, लेकिन उनकी पुकार भीड़के शोरमें दब गई। बाहर जाने वाले रास्तेसे एक साथ चार-पांच आदमी ही निकल सकते थे। इस हिसाबसे तो सारी भीड़को तम्बूसे बाहर निकलनेमें बहुत समय लगता। आग अपने रास्तेमें आने वाली हर चीजको हड़प करती जा रही थी। हजारों लोग अंदर फंसे हुए थे और उनमें सरकसके जानवर भी थे।

हर चीज नष्ट होती हुई दिखाई दे रही थी। तभी कोचिम्पनकी ऊंची और तेज आवाज सुनाई दी, "भागो मत, दोस्तो! अगर हमें मर-मिटना ही है, तो हम एक साथ मरेंगे। लेकिन इससे पहले हमें लोगोंको बचाना चाहिए। मेरे पीछे पीछे आओ।"

कोचिम्पनके चारों ओर जानवर इकट्ठे हो गए। उसके पीछे पीछे चलकर उन्होंने एक कोनेकी तरफ रास्ता बनाया और तम्बूमें एक बहुत बड़ा छेद किया और फिर उससे आगे एक छेद किया। उन दोनों छेदोंमेंसे पहले भीड़ और फिर जानवर बाहर निकल गए।

अब तक तम्बूके अधिकांश भागमें आग लग चुकी थी। ज्वालाकी अनगिनत जिह्वाएं विकराल नृत्य कर रही थीं। आगकी रोशनीने रातको दिन बना दिया था। कोचिम्पनने आग बुझानेके लिए अपने सिरकी बाजी लगा दी। वहां बहुतसे कोलतारके वे खाली पीपे रखे थे जो हाकीके मैचके लिए काममें लाए जाते थे। उसने अपने कंधे पर एक पीपा रखा और पासके तालाबकी ओर भागा। दूसरे जानवरोंने भी ऐसा ही किया। कुछ आदमी भी आसपासके घरोंसे बाल्टियां आदि ले आए और जानवरों तथा आदमियोंने मिलकर आगकी लपटोंपर पानी फेंका। तेज हवा चल रही थी। सबने पूरी पूरी कोशिश की, लेकिन कोई लाभ न हुआ। आग भड़कती ही रही।

भारी जीसे आदमी अपने अपने घर चले गए। हाय, जानवरोंका वह सरकस जिसने उन्हें और उनके बच्चोंको असीम आनंद दिया था, अब नहीं रहा था!

जानवरोंके पास जानेके लिए कोई ठिकाना नहीं था।

एक समूहमें गजन, सिहन, दंतुला, कालू और घोड़े बैठे थे। वे नन्हे बच्चोंकी तरह फूट फूटकर रो रहे थे।

उनसे थोड़ी-सी दूर दूसरे समूहमें जम्बू, नजलू, लालू और ऊंट थे। वे गहरी नींद सो रहे थे।

कोचिम्पन रोया नहीं। वह सोया भी नहीं। वह अकेला बुतकी तरह बैठा उस राखके ढेरकी तरफ देखे जा रहा था। स्वभावसे वह विनोदी था। पर अब सब कुछ खत्म हो चुका था। उसके हृदयमें तूफानी समुद्रकी लहरोंकी तरह भाव उठ रहे थे।

अचानक उसे चिम्पनका खयाल आया। उसे खयाल आया कि उसने चिम्पनको काफी समयसे नहीं देखा—उस समय भी नहीं जब वे आगसे लड़ रहे थे। वह कहां है? कहीं सो रहा है? कोचिम्पनने उसे गजनके समूहमें देखा। चिम्पन वहां नहीं था। फिर उसने जम्बूके समूहमें देखा। नहीं, वह वहां भी नहीं था। कोचिम्पनने उन्हें जगाया—"मेरा भाई कहां है?" उसने पूछा।

जम्बूने जवाब दिया—"कौन—मैनेजर चिम्पन? वह यहीं कहीं होगा। उसकी फिक्र मत करो!"

कोचिम्पनको लगा कि लोमड़ मुसकरा रहा है। फिर वह इधर-उधर चिम्पनको ढूंढने लगा, लेकिन चिम्पन कहीं भी दिखाई नहीं दिया।

जब चिम्पनको होश आया, तो उसने अपनी आंखें खोलीं और चारों तरफ देखा। उसने अपने आपको एक छोटी-सी अंधेरी कोठरीमें पाया। तीन ओर पत्थरकी दीवार थी और चौथी तरफ लोहेके सींखचे थे जिनके बीच एक दरवाजा था। उसने दरवाजा खोलनेकी कोशिश की, लेकिन वह बाहरसे बंद था।

तब चिम्पनको वह घटना याद हो आई, जो उसके बेहोश होनेसे पहले घटी थी। वह जलते हुए तम्बूमें था और भीड़के साथ भाग निकलनेकी कोशिश कर रहा था। अचानक कुछ आदमी उसपर लपके। एक मोटे बदसूरत आदमीने जबरदस्ती उसे कुछ सुंघाया। इसके बाद क्या हुआ—यह उसे याद नहीं था। फिर भी एक बात साफ थी। उन्हीं आदमियोंने उसे दवा सुंघाई, वही उसे वहां

(शेष पृष्ठ २६ पर)

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

"सोचता हूं अगला चुनाव जीतकर क्यों न हम 'बच्चों की सरकार' बनाएं!"

"खयाल तो अच्छा है, मगर प्रधान मंत्री मैं ही बनूंगा—देखो मेरी शास्त्रीजीवाली मुद्रा!"

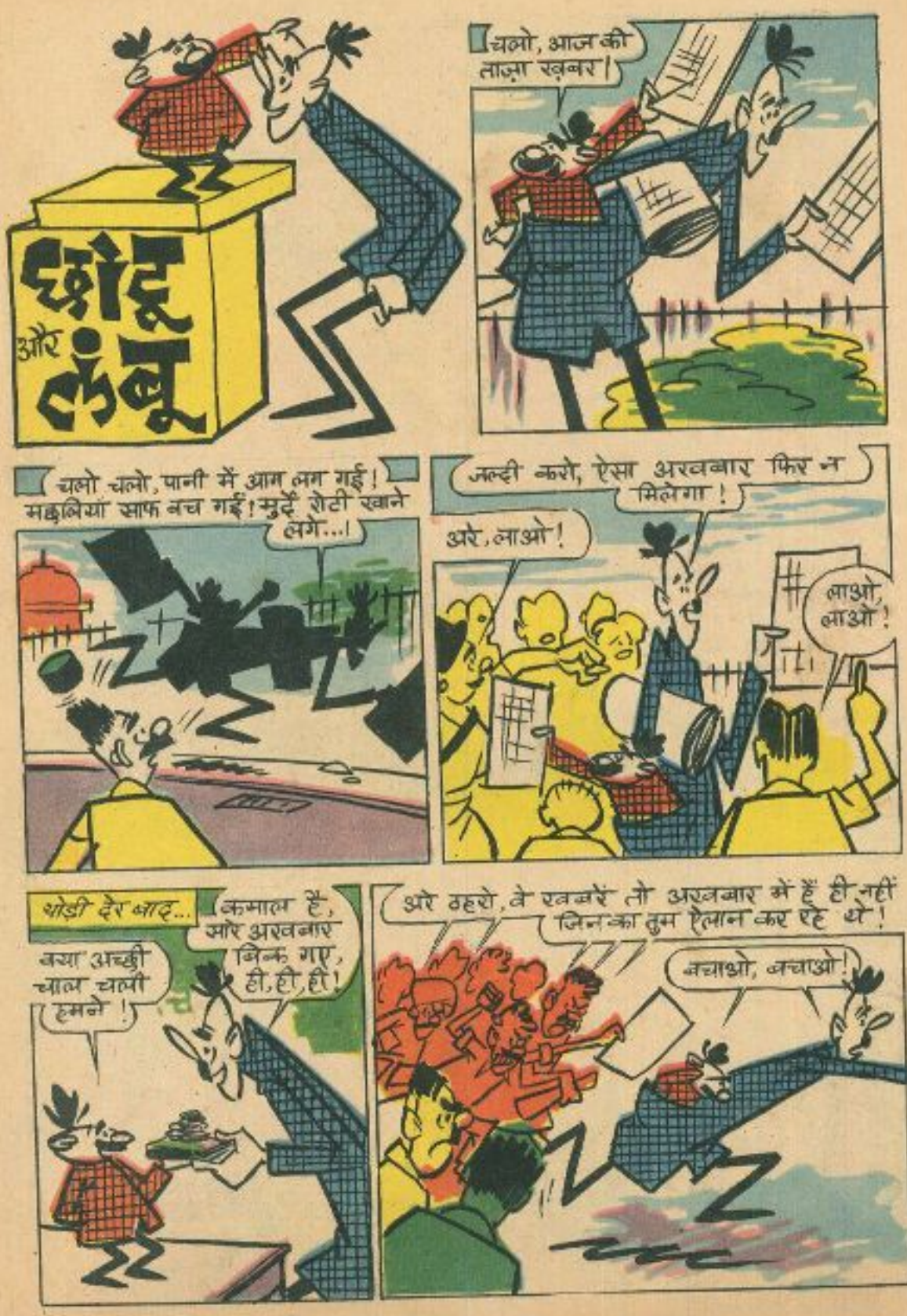
छोटू और लंबू
चलो, आज की ताज़ा ख़बर!
चलो चलो, पानी में आग लग गई! मछलियां साफ बच गईं! मुर्दे रोटी खाने लगे...!
जल्दी करो, ऐसा अखबार फिर न मिलेगा!
अरे, लाओ!
लाओ, लाओ!
थोड़ी देर बाद...
कमाल है, सारे अखबार बिक गए, ही, ही, ही!
क्या अच्छी चाल चली हमने!
अरे ठहरो, वे खबरें तो अखबार में हैं ही नहीं जिनका तुम ऐलान कर रहे थे!
बचाओ, बचाओ!

अरे, यह भाग-दौड़ कैसी?
क्या बात है, भई?
इन लोगों ने झूठी खबरों का ऐलान कर के हमें ठग लिया!
हुं, दर असल शायद अखबार में भूल से वे खबरें ही छपने से रह गईं!
फिर इनके पैसे वापस करो!
पैसे वापस कर के सारे अखबार मुझे दो। याद रखो मैं पुलिस का आदमी हूं!
ठीक है, भाई!
घर पर...
कमाल है, धंधा करने चले थे चालाकी से लेकिन यह पुलिस वाला कहां से आ कूदा!
अरे! यह कौन?
अरे यार, छोटू-लंबू को मैंने पुलिस वाला बनके डरा दिया और उनके अखबार खुद बेच कर आज खूब मौज उड़ाई!
हा, हा, हा!
अररर, लुट गए!

सरकस (पृष्ठ २३ से आगे)

लाए और उन्होंने उसे यहां बंद किया। उसे यह मालूम नहीं हुआ कि वे कौन थे और उन्होंने ऐसा क्यों किया।

इतनेमें चिम्पनको किसीकी पदचाप सुनाई दी और तभी उसने केलनको आते देखा।

"बंदर, तुम्हारा खयाल था, तुम मेरी उपेक्षा कर सकते हो—है न? लेकिन अब तुम जान गए होगे कि यह तुम्हारी भूल थी।"

"तो आपने ही मुझे यहां फंसाया है, केलन साहब! मैंने आपका क्या बिगाड़ा था?"

"मैंने तुमसे कहा था कि अपने साथियोंके साथ मेरे सरकसमें आ जाओ, लेकिन तुमने परवाह ही नहीं की।"

"आपने हमारे प्रिय मालिकको धोखा दिया। आपने उन्हें बरबाद किया। आपसे न हमारा पहले कभी कोई वास्ता था और न आगे कभी होगा।"

"तब तुमने अपनी बात मनवाई। अब मैं अपनी बात मनवाऊंगा। मेरा कहना मान लो, वरना मैं तुम्हें मजबूर कर दूंगा। मेरे पास शक्ति है।"

"कैसी शक्ति?"

"तुम यहां इस काल-कोठरीमें मर जाओगे।"

केलनने अपने मुख्य सेवकको पुकारा—"चाप्पन, जरा बंदूक देना!"

तभी एक व्यक्ति आया। चिम्पन उसे पहचान गया। उसीने उसे कोई चीज सुंघाकर बेहोश किया था।

केलनने बंदूक ली, उसकी नलीको लोहेके सींखचोंमेंसे अंदर डाला और फिर चिम्पनकी तरफ नलीका मुंह कर दिया। बेचारे चिम्पनको मौत मुंह खोले दिखाई दी।

केलनने गोली नहीं दागी। उसने बंदूक हटा ली: "बंदर, अगर तुम्हें अपनी जान प्यारी हो, तो मेरे सरकसमें भर्ती हो जाओ। मैं तुम्हें दो सप्ताहका समय देता हूं। निश्चित तिथिपर मैं आधी रातको आऊंगा। अगर तब भी तुमने इंकार किया, तो मैं तुम्हें गोली मार दूंगा।"

केलनने चाप्पनको बंदूक वापस दे दी और फिर वह चला गया।

अपने मालिकके पीछे पीछे जानेसे पहले चाप्पनको भी एक बात कहनी थी—"बंदर, तुम्हारा खयाल है कि तुम चालाक हो, लेकिन तुम मुझसे चालाकी नहीं चल सकते। अगर तुम्हें भागनेकी उम्मीद हो, तो छोड़ दो। तुमने मुझे अभी पूरी तरहसे नहीं जाना है।"

अकेले होनेपर चिम्पनने अपनी हालतपर सोच-विचार किया। मृत्यु मुंह फाड़े उसे निगलनेके लिए तैयार खड़ी थी। उसने कोई पाप नहीं किया था, फिर उसे ऐसा दंड क्यों मिला! उसने सोचा, जिस आगने उसके सरकसको जलाया था, वह केवल कोई दुर्घटना नहीं थी। वह केलनकी आज्ञापर चाप्पनका काम था। उसके भाई और मित्रोंका क्या हुआ? भगवान जाने।

चिम्पन जानता था कि वह केलनके सरकसमें भर्ती होकर अपनी जान बचा सकता है। लेकिन क्या यह कायरता नहीं है? इसके अलावा वह उस आदमीकी सेवा कैसे कर सकता है जिसने उसके मालिकको धोखा दिया हो? नहीं, वह ऐसा नहीं करेगा। केलनकी बंदूक केवल उसके शरीरको नष्ट करेगी, उसकी आत्माको नहीं। कोई भी शत्रु उसकी आत्माको नष्ट नहीं कर सकता।

एक आवाजने चिम्पनकी विचार-धारा तोड़ी: "यह रहा खाना। मेहरबानी करके खा लीजिए।" एक लड़केने सींखचोंमेंसे चावलका कटोरा खिसकाया। "मैं आपका दोस्त हूं। मैं आपसे बहुतसी बातें करना चाहता हूं, लेकिन मैं इस समय नहीं कर सकता। वहां कुछ दूर खड़ा चाप्पन हमें देख रहा है। मैं फिर आऊंगा," लड़केने धीरेसे कहा और वह तेजीसे चला गया। उसका नाम कुज्जाप्पू था।

जब चाप्पन वहां नहीं था, तो कुज्जाप्पू फिर आया। उसने चिम्पनसे बात की, उसे ढाढ़स बंधाया और उसे अपने दुख-दर्दके बारेमें भी बताया। चिम्पन उसकी ओर आकर्षित हुआ और उसे उससे स्नेह हो गया—वैसा ही स्नेह जैसा वह कोचिम्पनसे करता था। कुज्जाप्पूके लिए चिम्पन अजनबी नहीं था। उसने तालश्वेरीमें जानवरोंका सरकस देख रखा था और चिम्पन उसका आदर्श था। एक बार उसने ऐसे ही पूछा, "क्या आप कभी मेरे कुत्ते वेलुम्पन बाजीगरसे मिले हैं?"

"वेलुम्पनसे मिला हूं? अरे, वह तो हमारे सरकसका सबसे बड़ा खिलाड़ी है!" चिम्पनको इंटरव्यूकी याद हो आई। कुत्तेने कहा था कि मेरे मालिक कुज्जाप्पूने मुझे बाजीगरी सिखाई है। चिम्पनको अब मालूम हुआ कि यही वह नन्हा प्रतिभाशाली लड़का है। उसने सींखचोंमेंसे अपने हाथ बाहर निकाले और लड़केको गले लगा लिया।

सातवें दिन केलन फिर आया। उसके साथ चाप्पन भी था। "बंदर, तुमने क्या फैसला किया? जीना है या मरना?" केलनने कठोर स्वरमें पूछा।

चिम्पनने कोई जवाब नहीं दिया।

"बोलो, बस एक हफ्ता और है—मैं तुम्हें बताए देता हूं!" केलनने कहा।

"शायद इसने मौत चुन ली है," चाप्पनने भयंकर ढंगसे दांत दिखाते हुए कहा।

चिम्पन बोला, "हां, मैंने मौत चुन ली है, केलन साहब। तुमने हमारे प्यारे मालिकको धोखा दिया। तुमने उन्हें नष्ट किया। तुम्हारे साथ कोई मेलजोल नहीं होगा। मुझे मरने का डर नहीं है। और मैं तुमसे दुबारा बात भी नहीं करूंगा।"

"बहुत अच्छा। मुझे आशा है, जब तुम्हें बंदूकका सामना करना पड़ेगा, उस समय भी तुम यही हिम्मत दिखाओगे!" केलनने कहा और फिर वह चाप्पनके

साथ चला गया।

एक सप्ताह और—और चिम्पन जानता था कि वह जीवित नहीं रहेगा। उसे अपनी चिंता नहीं थी। उसे अपने भाई और साथियोंकी चिंता थी। वह जानता था कि वे सब उससे कितना प्यार करते हैं। उसे खयाल आया कि उसके जानेके बाद वे सब कितने परेशान हो रहे होंगे। और यह सोचकर वह रोने लगा।

"चिम्पन, रोओ मत, हिम्मत रखो," एक स्त्रीने कहा।

चिम्पनने देखा कि काल-कोठरीके बाहर एक बूढ़ी स्त्री खड़ी है। वह उसे पहली बार देख रहा था, लेकिन वह फौरन समझ गया कि वह दादी है। कुज्जाप्पूने उसके बारेमें चिम्पनको सब कुछ बता रखा था।

"चाप्पन कहीं गया हुआ है। मैं तुम्हारी मदद करने आई हूं। तुम्हारे भागनेका एक रास्ता है," दादीने कहा।

भागनेका रास्ता? असंभव—चिम्पनने सोचा।

"केलन और चाप्पनको अपराध करनेमें मजा आता है," दादीने कहा, "बहुतसे लोग उनके शिकार हुए हैं। तुम अगले शिकार हो। अगर भगवानने चाहा, तो इस बार मैं यह नहीं होने दूंगी। चिम्पन, अपने भाईको एक चिट्ठी लिखो। उसे इस समयका अपना सारा हाल लिखो और विशेषकर यह कि केलन शनिवारकी आधी रातको तुम्हें गोली मारना चाहता है।"

लेकिन चिट्ठी कोचिम्पन तक पहुंचेगी कैसे? चिम्पन ने सोचा। और अगर पहुंच भी गई, तो कोचिम्पन उसकी रक्षा कैसे करेगा?

दादी चिम्पनके विचार भांप गई: "यह समय शंका-संदेह करनेका नहीं है। जल्दीसे चिट्ठी लिखो!"

कुज्जाप्पूने कागज़-पेंसिल दी और चिम्पनने एक चिट्ठी घसीट डाली। कुज्जाप्पूने उसे मोड़ा, अपनी फाख्ता-की टांगोंके साथ बांधा और उसके कानोंमें धीरेसे कुछ कहा। तीरकी तरह परिंदा उड़ गया और जल्द ही नजरोंसे ओझल हो गया।

चिम्पनका हृदय कृतज्ञतासे भर उठा। निराशामें उसका अच्छाईपरसे विश्वास उठ गया था। अब उसे लगा कि नहीं, वह गलत था, कि जहां हमें बिल्कुल आशा नहीं होती, वहां अच्छाईका निवास होता है, कि कभी कभी अच्छाई अपने आप मदद करने आन पहुंचती है।

दो दिन बाद चाप्पन लौट आया। "बंदर, तुम्हारे जीवनके पांच दिन और रह गए हैं," उसने कहा।

चिम्पन शांत था।

"तुम अब बोल नहीं रहे, लेकिन शनिवारकी आधी रातको बोले बिना नहीं रह पाओगे।" चाप्पनने राक्षसों जैसी हंसी हंस दी।

चिम्पन उस जल्लादका मतलब समझता था। शनि-वारकी आधी रातको केलन उसे गोली मार देगा और जब गोली उसके हृदयको बेधेगी, तो वह दर्दके मारे चीख उठेगा।

"मैंने केलन साहबसे प्रार्थना की कि तुम्हें मारनेका काम मुझे सौंपा जाए, लेकिन वे तुझे अपने हाथों मारना चाहते हैं। मुझे आशा है, तुम्हारी जगह तुम्हारे भाईको मारनेका सौभाग्य मुझे मिल जाएगा," चाप्पनने पीछे हटते हुए कहा।

चिम्पनको अपने भाईका खयाल आया और उसकी आंखोंसे आंसू बह चले। (क्रमशः)

(अनुवाद : ललित सहगल)

दुबली-पतली परेशानियां----

—मोदी

"इतनी ऊंचाई से तो हंसते हंसते कूद जाऊं!"

"पर नीचे तो एकदम कड़ी जमीन है, रे!"

"जाने दो, क्या रखा है परेशानी उठाने में!"

हास्यकहानी

कायदे से

दादाजीने कहीं पढ़ा—हमें सब काम कायदे-से करने चाहिएं। जाने क्यों उन्हें यह बात भा गई और उन्होंने इसपर अमल करनेका निश्चय कर लिया। अब दादाजीकी आदत है कि जिस कामको करनेकी ठान लें, उसे न केवल खुद कायदेसे करेंगे बल्कि घरके सदस्योंसे भी कायदेसे ही करवाएंगे, विशेष तौरपर पोते-पोती यानी राजू, मुन्नू और पिंकीसे।

एक दिन राजूकी पड़ोसके बबलूसे लड़ाई हो गई। सूजी हुई दाईं आंख लिये वह मम्मीसे बबलूकी शिकायत करने लगा, तो दादाजी डपटकर बोले, "कायदेसे तुम्हें बबलूकी मांके पास जाना चाहिए। अब तुम बड़ोंकी भी लड़ाई करवाओगे।"

फिर मम्मीकी भी हिम्मत न हुई कि जाकर बबलूकी मांको उलाहना दे आएं।

पिंकीसे उस दिन गणितका सवाल नहीं निकला, तो दादाके पास ले गई। बोली, "दादाजी, इसका उत्तर नहीं मिलता।"

दादाजीने स्लेट और बत्ती हाथमें लेते हुए पूछा, "सवाल कायदेसे किया था?"

"हां, दादाजी, पहले जमा, फिर घटा, बादमें गुणा, पर उत्तर नहीं मिलता।"

दादाजीने घंटेभरमें कोई पांच-छह प्रयत्न किए और पांच-छह अलग अलग जवाब निकाले, पर एक भी जवाब पुस्तकके अंतमें दिए हुए उत्तरसे न मिला। दादाजीकी खोपड़ी भन्ना गई, सिर दुखने लगा। खिसियाने होकर बोले, "पिंकी बेटी, कायदेसे तुम्हें सवाल पहले मम्मीसे समझना चाहिए फिर डैडीसे; उनसे न निकले, तो मेरे पास लाना।"

धीरे धीरे दादाजीके 'कायदेसे' ने घरमें इतना अधिकार जमा लिया कि घरमें कायदेके बिना पत्ता तक हिलना बंद हो गया। सब्जीमें नमक कम है, तो दादाजी मम्मीसे कहते—'बहूरानी, सब्जी तो कायदेसे बनाया करो।' डैडी दफ्तरसे देरसे घर लौटते, तो दादाजी आते ही लगे हाथों लेते—'बेटा दफ्तर पांच बजे बंद होता है, तुम्हें कायदेसे साढ़े पांचपर घर पहुंच जाना चाहिए।'

राजू, मुन्नू और पिंकीकी तो शामत ही आ गई। उनके उठने-बैठने, खाने-पीने, सोने-जागने, पढ़ने-लिखने तकमें दादाजीका कायदा अड़ंगा लगाने लगा :

"मुन्नू, यह कहांका कायदा है कि पूरी शाम खेलते रहते हो!"

"राजू! मुन्नू!! पिंकी!!! कहीं मेरी बत्तीसी देखी है, भाई?"

"दादाजी, पहले आपने कायदेसे बत्तीसी ढूंढ़ ली है न?" राजूने पूछा।

"हां हां, भई, सारी जेबें देख लीं।"

"नहीं, दादाजी, कायदेसे पहले आपको अल्मारीमें देखनी चाहिए, फिर आलोंमें, ताकपर और कायदेसे चलते हुए अंतमें छोटी छोटी जगह यानी जेबोंमें देखनी चाहिए!" मुन्नूने ठीक कायदा बताया।

दादाजीने अल्मारी खोली। बत्तीसी तो क्या मिलनी थी कि उल्टे चौंककर बोले, "अरे, मैंने सुबह अखबार पढ़कर चश्मा यहां रखा था। कहां चला गया?"

"देखिए, दादाजी, बत्तीसी पहले गुमी है

अवतारसिंह

"कायदेसे खाओ, राजू, सारी सब्जी मेजपर फैला रहे हो।"

"पिंकी, कायदेसे पढ़ा करो कुर्सीपर बैठकर, पलंगपर लेटकर नहीं।"

इस तरह हरेक काम कायदेसे होनेके कारण घर जैसे फौजी कैम्प बन गया था और मुन्नू, राजू, पिंकी फौजके जवान। तीनोंने देख लिया था कि यदि शीघ्र ही दादाजीके 'कायदे' के विरुद्ध कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया, तो खेलना तो क्या, पढ़ना तक मुश्किल हो जाएगा। तीनोंने एक गुप्त मीटिंग की और दादाके 'कायदे' के विरुद्ध किलेबंदीकी स्कीम तैयार हो गई।

रविवारको मम्मीने बहुत बढ़िया दही-बड़े बनाए और सुबह ही सुबह घीमें तैरती गरमा-गरम पूरियोंकी सुगंधसे घर भर उठा। दादाजी-ने कायदेसे पहले बच्चोंको खिलाया और फिर आप खाने बैठे। जेबमें हाथ डाला, तो चौंक गए। उनकी बत्तीसी गायब थी। दूसरे कपड़ोंकी जेबें, यहां तक कि डैडीके सूट तककी जेबोंको छान डाला। लेकिन बत्तीसी न मिली। उन्हें याद था कि रातको साफ करके बत्तीसी कुर्तेकी जेबमें डाली थी। हार मानकर वे चिल्लाए,

इसलिए कायदेसे पहले आपको बत्तीसीकी फिक्र करनी चाहिए। चश्मा बादमें ढूंढिएगा।" पिंकीने कायदा समझाया।

दादाजी इस बार समझ गए कि बच्चे उनका मजाक उड़ा रहे हैं। डांटकर बोले, "भाग जाओ, शैतानो! सरकार भी कितनी पागल है, जो इतवारको स्कूल बंद रखती है। जाओ, मैं अपने आप दोनों चीजें ढूंढ लूंगा।

बच्चे पढ़नेके कमरेमें चले गए। दादाजीने आधे घंटेमें सारा घर छान मारा, पर सब बेकार। फिर वे बच्चोंके कमरेमें घुसे। उन्हें डांटनेका कोई खास कारण नहीं मिल रहा था क्योंकि वे सब कायदेसे कुर्सियोंपर बैठे पढ़ रहे थे। पिंकीने दादाजीको कमरेमें आया देख सहानु-भूतिसे पूछा, "दादाजी, मिल गई बत्तीसी?"

"खाक मिल गई! तू अपनी किताब पढ़!" दादाजी उसीपर बरस पड़े।

"दादाजी, आपने अकेले ढूंढ़ी होगी। कायदेसे पहले मम्मी और डैडीसे ढूंढ़वाते। उन्हें न मिलती, तो फिर हम साथ आ लगते।" राजूने उन्हें गल्ती बताई।

दादाजीको नया विचार सूझा। डैडी इतवारको दिन चढ़े तक सोया करते हैं। दादाजीने पहले तो

प्रशान्त कुमार जिंकर

समझदार बच्चे

अच्छी लिखाई न लिखने के कारण नरेश को कान पकड़ने पड़े।

और सभी बच्चे खुश हैं क्योंकि वह अच्छी लिखाई के लिये अपनी पेंसिल वैन्डर शार्पनर से बनाते हैं जो कि अच्छी पेंसिल बनाने के लिये सर्वोत्तम हैं। वैन्डर फाउनटेन पेन की निबें भी खरौंच रहित और सरल प्रवाह लिखावट के लिये सर्वोत्तम हैं।

सुरेन्द्रा
वैन्डर®

वैन्डर 444

वैन्डर 666

पेंसिल शार्पनर
भिन्न-भिन्न प्रकार के आकर्षक रंगों में प्राप्य

फाउनटेन पेन निब
हर प्रकार के पैनों के लिये उपलब्ध हैं।

भारत 333

निर्माता
सुरेन्द्रा प्राडक्ट्स कम्पनी
ईस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-८

graphicads/SP/152

स्टेट बैंक, बिजनौर

जाकर डैडीको झकझोरा, फिर यों उठाकर बैठा दिया जैसे वह स्कूल जाते बच्चे हों। बोले, "उठो, बेटा, कायदेसे सात बजे उठ जाया करो। चाहे इतवार हो या कोई और छुट्टीका दिन, कायदा नहीं तोड़ना चाहिए। देखो, मेरी बत्तीसी-चश्मा नहीं मिल रहे हैं। जरा ढूंढ़ देना। जाने कहां रखके भूल गया।"

डैडीने अलसाए हुए उठकर यहां वहां ताक पर, आलोंमें दो-चार हाथ मारे और फिर दुबारा बिस्तरमें घुसते हुए बोले, "पिताजी, आज इतवार है। दुकानें बंद हैं। कल मैं आपको नया बढ़िया चश्मा और बत्तीसी बनवा दूंगा।"

नई वस्तुएं मिल जानेकी कल्पनासे दादाजीको राहत मिली। बच्चोंसे ढुंढ़वाना अब वह अपनी तौहीन समझते थे। मम्मीने उनके लिए मीठा हलुवा बना दिया और दादाजीने रोनी सूरत बनाए वह निगल लिया। हलुवेमें वह बात कहां जो दही-बड़े और गरमागरम कड़ाहीसे उतरती पूरियोंमें है!

दोपहरको डैडी बाजारसे मिठाई ले आए। मिठाईका डिब्बा देखकर दादाजीने नई आशाके साथ कोई घंटा भर फिर बत्तीसी ढूंढ़ी। उन्हें चश्मेकी कतई फिक्र न थी। पर बत्तीसी भी न मिलनी थी, न मिली। दोपहरमें सबने खाना खाया और बादमें मिठाई। दादाजीके लिए मम्मीने फिर हलुवा बना दिया।

झुंझलाते हो रहे दादाजी बरामदेमें चारपाईपर बैठे थे जब पिंकी, मुन्नू, राजू गेंद लिये पढ़नेके कमरेसे निकले। जब वे पाससे गुजरे, तो दादाजीने उनसे कहा, "इम्तहान सिरपर हैं। कायदेसे इम्तहान तक पढ़ो। बादमें खेला करना।"

तीनोंने हैरानीसे दादाजीकी ओर देखा। उनका उदास चेहरा देखकर वे दरवाजेसे मुड़ आए। राजूने पूछा, "दादाजी, मिल गई बत्तीसी?"

"नहीं, भाई, आज मुंह-अंधेरे एक काला कुत्ता घरमें घुस आया था, वह हड्डी समझकर न उठा ले गया हो।"

"ओफ्फोह! आज इतनी शानदार पूरियां बनीं और दादाजीकी . . .," पिंकीने एक ठंडी सांस भरी।

"और मिठाई! डैडी पहाड़गंज जाकर मदनलालकी दूकानसे लाए थे!" मुन्नूने भी ठंडी सांस ली।

दादाजीकी आंखोंमें लगभग आंसू ही तैर आए। तभी राजूने तपाकसे कहा, "दादाजी, आपकी बत्तीसी कुत्ता नहीं ले जा सकता। दस बजे तो मैंने यहीं कहीं देखी थी।"

"कहां देखी थी?" दादाजीकी आंखें खुशीसे चमक उठीं।

"यह तो याद नहीं आता," राजूने सिर खुजाया।

"तुम ढूंढ़ो, भाई, तुम्हें जरूर मिल जाएगी," दादाजी लगभग प्रार्थनाके-से स्वरमें बोले।

"पर दादाजी एक शर्त है," राजूने बातचीत जारी रखी।

"क्या?"

"आप कभी भी अपने मुंहसे 'कायदेसे' नहीं निकालेंगे।"

"अरे, भई, यह भी कोई शर्त है। तुम्हें बुरा लगता है, तो हम नहीं कहेंगे।"

"दादाजी, पक्की शर्त है। भूलना मत।" तीनों एक साथ बोले।

"एकदम पक्की। अब भगवानके लिए मेरी बत्तीसी ढूंढ़ दो।"

पिंकी, राजू और मुन्नू दिखानेके लिए अलग अलग कमरोंमें घुस गए और पांच-दस मिनिट उथल-पुथल करते रहे। फिर पिंकी एक हाथमें चश्मा और दूसरेमें बत्तीसी लिये सबसे पहले आ गई और बोली, "दादाजी, आप भी खूब हैं! गुसलखानेमें अपनी चीजें छोड़ आते हैं और सबको परेशान करते हैं।"

पर दादाजीको उसकी बातें सुननेका अवकाश कहां था? झपटकर बत्तीसी उसके हाथसे छीनी और मुंहमें बैठाकर रसोईकी ओर दौड़े। मम्मी बर्तन धो रही थी। उससे बोले, "बहूरानी, मेरी बत्तीसी मिल गई। थोड़ी मिठाई तो देना। चलकर देखूं, कैसी है?"

"पिताजी, मिठाई तो बची नहीं। सारी बच्चे खा गए!"

दादाजी जैसे आसमानसे गिरे। एक किलो मिठाई! सब खा गए! उदास होकर वे बोले, "भई, यह बहुत गलत बात है। तुम्हें 'कायदेसे' मेरा हिस्सा पहले ही अलग रख लेना चाहिए था!"

●

टप्पू का

"यदि हम टाफियां वापस करने का खेल खेलें तो?"

"मिल-मजदूरों से यह पुराना पोस्टर माँग लाया हूं!"

"हिन्दी में फ़ेल होने का क्या ग़म/बचपन से ही मैं इस भाषा का विरोधी रहा हूं!"

हुड़दंग!

"हम लोग स्कूल स्कूल खेल रहे हैं। मैं मास्टरजी हूं— चलो, तुम हाथ खोलो!"

"लगता है, मास्टरजी ने बचपन में कभी 'पराग' नहीं पढ़ा!"

"दादाजी, आप अपनी मूंछें साफ़ क्यों नहीं करा लेते? आधा दूध तो ये ही पी जाती हैं!"

(१७)

नत्थूके शकुल ताया अपना वही पुराना-धुराना बनिएकी तोंद जैसा मोटा थैला लिये तांगेसे उतरे और मैंने आश्चर्यसे देखा, नत्थूने मुसकराकर उनका स्वागत किया और चबूतरेपर टीनके नीचेवाले हिस्सेमें उनके लिए दरी बिछाकर तकिया लगा दिया। फिर वह घरके अंदर चला गया और कुछ ही देरमें आकर बड़े आदर भावसे तायाजीके पास बैठ गया।

मेरे आश्चर्यका पार न था। नत्थूको यह क्या हुआ! कैसे वह शकुल तायाकी सेवामें लग गया है? उसे तो शकुल तायासे और उनके सवालोंसे सख्त नफरत थी। पिछले साल भी एक

दिनके लिए शकुल ताया नत्थूके घर आए थे। उन दिनों उसके इम्तहान चल रहे थे और तायाजी-ने बेसिर-पैरके बेमतलब सवालोंकी झड़ी लगाकर नत्थूका दिमाग खराब कर दिया था। नत्थूका कहना है, वह अंग्रेजीमें इसी लिए फेल हुआ कि शकुल ताया उसके सिरपर सवार रहे, दे सवाल पर सवाल, दे सवालपर सवाल :

"क्यों नत्थू, तुम्हारा जो दोस्त अभी आया था, उसका नाम क्या था?"

"गोपाल।"

"वह श्रीपालका भाई है क्या?"

"कौन श्रीपाल?"

"तुम श्रीपालको नहीं जानते?"

"नहीं।"

"क्यों नहीं जानते?"

"क्योंकि नहीं जानता।"

"वह एक लड़का सुबह नहीं निकला था यहांसे?"

"निकला होगा।"

"मैंने पूछा नहीं था उससे कि क्या नाम है तुम्हारा?"

"पूछा होगा।"

"कहा नहीं था उसने कि मेरा नाम श्रीपाल है?"

"कहा होगा।"

"तो गोपाल उसका भाई नहीं है क्या?"

"नहीं।"

"फिर दोनोंके नाम मिलते-जुलते क्यों हैं? गोपाल और श्रीपाल, श्रीपाल और गोपाल!"

"क्योंकि दोनों एक साथ भोपाल रह चुके हैं!"

"भोपालमें सबके नाम एकसे होते हैं क्या?"

नत्थूको बहुत गुस्सा आ गया था। वह जवाब दिए बिना अपनी किताबसे मायनें याद करने लगा था : "बी यू टी बट, बट माने लेकिन, पी यू टी पुट, पुट माने रखना. . ."

"क्या पढ़ रहे हो?" तायाजीने पूछा था।

"किताब।"

"कौन-सी किताब?"

"अंग्रेजीकी।"

"अंग्रेजीकी?"

"हां, अंग्रेजीकी।"

"अंग्रजी क्यों पढ़ रहे हो?"

"क्योंकि हिन्दी नहीं पढ़ रहा।"

"हिन्दी क्यों नहीं पढ़ते?"

"क्योंकि अंग्रेजी पढ़ रहा हूं।"

"गुस्सा कर रहे हो?"

"नहीं!"

"फिर बताते क्यों नहीं, अंग्रेजी क्यों पढ़ रहे हो?"

"क्योंकि कल अंग्रेजीकी परीक्षा है।"

"परीक्षामें क्या पूछा जाएगा?"

"सवाल।"

"कौनसे सवाल?"

"बी यू टी 'बट' होता है, तो पी यू टी 'पट' क्यों नहीं होता!"

"क्यों नहीं होता?"

(कृपया पृष्ठ ४७ देखिए)

कहानी

चुन्नू की डायरी

— मधुजय वाचस्पति

१७ मई (शनिवार): आज माताजी पिताजीसे कह रही थीं कि अपना चुन्नू अब धीरे धीरे अच्छा लड़का बनता जा रहा है। मुझे भी लग रहा है कि मैंने बहुतसे गंदे काम छोड़ दिए हैं। यों कभी कभी डांट भी पड़ जाती है, फिर भी कुछ बातोंमें मुझे अधिकतर शाबाशी ही मिलती है; आज मुझे उसके साथ साथ भूरे रंगका एक पेन भी इनाममें मिला।

इनाम किस बातका? यह लिखनेसे पहले मुझे कुछ दिन पहलेकी बागवाली एक घटनाको याद करना पड़ेगा। याद आया कि उस दिन बहुत दिनों बाद धूप निकली थी। छोटा भाई नीलू माताजीको तंग कर रहा था, इसलिए मैं नीलूका हाथ पकड़कर उसे बागमें घुमाने ले गया। बहुत देर हम बागमें घूमते रहे। कुछ देर हरी घासमें लेटे, कुछ देर तितलियोंके पीछे भागे। लौटते समय जब हम बागसे निकलकर सड़कपर आए, तो अचानक नीलू रो पड़ा। पूछनेपर उसने अपने पैरकी ओर इशारा किया था, जिसमें एक नुकीला पत्थर चुभा था। मैंने उसके पैरको सहलाया और आश्चर्यसे चारों ओर देखा, क्योंकि उसके एक पैरका जूता भी गायब था। नीलू अभी तुतलाकर बोलता है। उसने केवल इतना ही बतलाया कि जब हम घासमें बैठे थे, तो एक पैरसे जूता उतर गया था। उसके बाद नीलू उतरे हुए जूतेके बारेमें भूल गया था।

नीलूको साथ लेकर मैं उन सभी जगह गया, जहां हम बैठे थे या तितलियोंके पीछे भागे थे। परंतु जूता नहीं मिलना था, सो नहीं मिला। लौटते समय मेरा दिल बहुत जोरसे धड़क रहा था। आज अगर मार नहीं पड़ी, तो डांट तो अवश्य पड़ेगी।

किंतु घरपर माताजीने मुझे डांटा नहीं क्योंकि नीलूसे उन्हें पता लग गया कि मेरा कुछ भी दोष नहीं था। फिर भी उन्होंने कुछ बातें मुझे समझाई थीं। उन्होंने बतलाया था कि कुछ लोगोंकी यह आदत बहुत खराब होती है कि वे रास्तेमें मिलने वाली हर वस्तुको, चाहे वह एक जूता या एक मोजा ही क्यों न हो, उठा लेते हैं; फिर चाहे उन्हें कुछ दूर जाकर उसे फेंक ही क्यों न देना पड़े। उनकी बात सुनकर मैंने निश्चय कर लिया था कि आगेसे रास्तेमें पड़ी हुई किसी भी वस्तुको मैं अब कभी हाथ नहीं लगाऊंगा, चाहे वह वस्तु मेरे लाभकी हो या न हो।

और अपने निश्चयको मैंने आज पूरा किया है। आज शामको मैं और पिताजी सेठी साहबके यहां गए थे। जब हम उनके यहां पहुंचे तब वह और चाचीजी दोनों कुछ खरीदारी करके उसी समय घर लौटे थे। हमें आया देखकर चाचीजीने चायका पानी स्टोवपर रख दिया और चाचाजीको दूध लेने भेज दिया।

सेठी साहबने घरके आगे, सड़कके किनारे बहुत सुंदर परंतु छोटा-सा एक बाग लगाया है। उसे ही देखने मैं उनकी बैठकसे बाहर निकल आया और जब तक उन्होंने मुझे चाय पीनेके लिए बुलाया नहीं, तब तक उनके कुत्ते जैकीके साथ मैं बागमें घूमता रहा और उनके फाटकपर खड़ा होकर सड़कके पार खेल रहे बच्चोंको देखता रहा।

जब हम सब चाय पीने मेजपर बैठे, तो चाचाजी मुझसे बातें करने लगे। अचानक चाचीजीने हमारी बात काटकर चाचाजीसे पूछा, "आपको पूलिया डेरीवालेने दूध क्या भाव दिया?"

"जब दूध उधार लिया है, तब भाव क्या पूछना?"

"क्या मतलब?" आश्चर्यसे चाचीजीने पूछा, "मैंने आपको पांचका नोट स्वयं दिया है। उसका क्या हुआ?"

"मैं मानता हूं कि तुमने नोट दिया था परंतु पता नहीं रास्तेमें कहां गिर गया। अंधेरा हो रहा था इसलिए नहीं मिला। किसीने उठा लिया होगा।"

मैं उनकी बात चुपचाप सुनता रहा, फिर उनका हाथ पकड़कर उठाते हुए बोला, "चाचाजी, मुझे नहीं पता था कि नोट आपका है। एक पांचका नोट तो गेटके बाहर पड़ा है। आइए, मैं आपको दिखाता हूं।"

चाचाजी और चाचीजी दोनों आश्चर्यसे मेरे पीछे पीछे गेट तक आए। उनका नोट अभी भी सड़कके किनारे पड़ा था।

चाचाजी उस नोटको पाकर बहुत खुश हुए और जब मैंने उन्हें बागवाली घटना और अपना निश्चय बतलाया, तो वह और भी खुश हुए। उन्होंने मेरे इस दृढ़ निश्चयसे प्रभावित होकर मुझे अपना भूरे रंगका पेन दे दिया।

मैं सोचता हूं कि अगर रास्तेमें मिलने वाली प्रत्येक वस्तुको अगर चलने वाला तब तक न उठाए, जब तक कि वह उसकी न हो या तब तक न उठाए जब तक कि वह उसे पासवाले थानेमें जमा करवानेका निश्चय न कर ले, तो वह वस्तु अवश्य उसीको मिलेगी जिसकी है और इससे

लोगोंको बेकारकी परेशानी या हानि नहीं होगी।

मैं कल जाकर स्कूलमें अपने दोस्तोंको इस बारेमें जरूर बताऊंगा।

२२ जून (मंगलवार): अब गर्मी आ गई है। ठंडी ठंडी आइसक्रीम और मीठे मीठे आम हर जगह मिलने लगेंगे। यह दो चीजें मेरी मनपसंद है और केवल गर्मीमें ही मिलती हैं, इसलिए मुझे गर्मी भी अच्छी लगती है। परंतु गर्मीमें एक चीजसे मुझे बहुत गुस्सा आता है, जब देखो तब पानी गायब।

आज भी जब नल खोला, तो पानी नहीं आ रहा था। मम्मी पीनेके लिए पानी भरना भूल गई थीं, इसलिए मैं जल्दीसे बर्तन लेकर घरसे निकल आया। सामने नगर-पालिकाका नल है जिसमें पतली धारके रूपमें थोड़ा थोड़ा पानी आ रहा था। परंतु वहां पानी भरना और भी मुश्किल है, क्योंकि वहां हमेशा पानी भरने वालोंकी लंबी कतार लगी रहती है।

लगभग आधा घंटे बाद मेरा नंबर आया। मैंने अपना बर्तन भर लिया और कतारसे निकल आया। मेरे पीछे पानी भरने वालोंकी अभी बहुत दूर तक लंबी कतार लगी थी। उसमें राजू और अनिलके पिताजी भी बाल्टी लिये खड़े थे। राधाकी मां सबसे पीछे खड़ी थी।

जैसे ही मैं क्यूसे निकला, तो मेरी नजर एक औरतपर पड़ी, जिसके पास एक बच्चा खड़ा हुआ रो रहा था। औरत बार बार लोगोंसे कह रही थी—'भई, कोई आदमी अपनी जगह दे दो, तो मैं इस बच्चेको पानी पिला दूं, बहुत प्यासा है।'

परंतु कोई भी अपनी जगह देनेको तैयार नहीं था। और न ही कोई उसे अपने भरे बर्तनमेंसे पानी देनेको तैयार था। सब जल्दी जल्दी पानी भरकर ले जा रहे थे और पुनः क्यूमें आकर खड़े हो जाते थे।

उन दोनोंको धूपमें इस प्रकार पानीके लिए याचना करते देख मुझे दया आ गई। घरपर माताजी पानीके लिए मेरा इंतजार कर रही थीं, उन्हें खाना भी बनाना था, परंतु मैंने उन दोनोंको पानी पिला दिया और फिर क्यूमें आकर खड़ा हो गया।

अबकी बार पौन घंटे बाद मेरा नंबर आया। उतनी देर मैं यही सोचता रहा कि हम कितना पानी व्यर्थमें बहा देते हैं। स्कूलमें तो अक्सर मैं भी पानी पीकर नल खुला छोड़ देता हूं, क्योंकि मुझे यह ध्यान नहीं रहता कि इस पानीके बह जानेसे हमें भी हानि होती है। घरपर बाल्टी

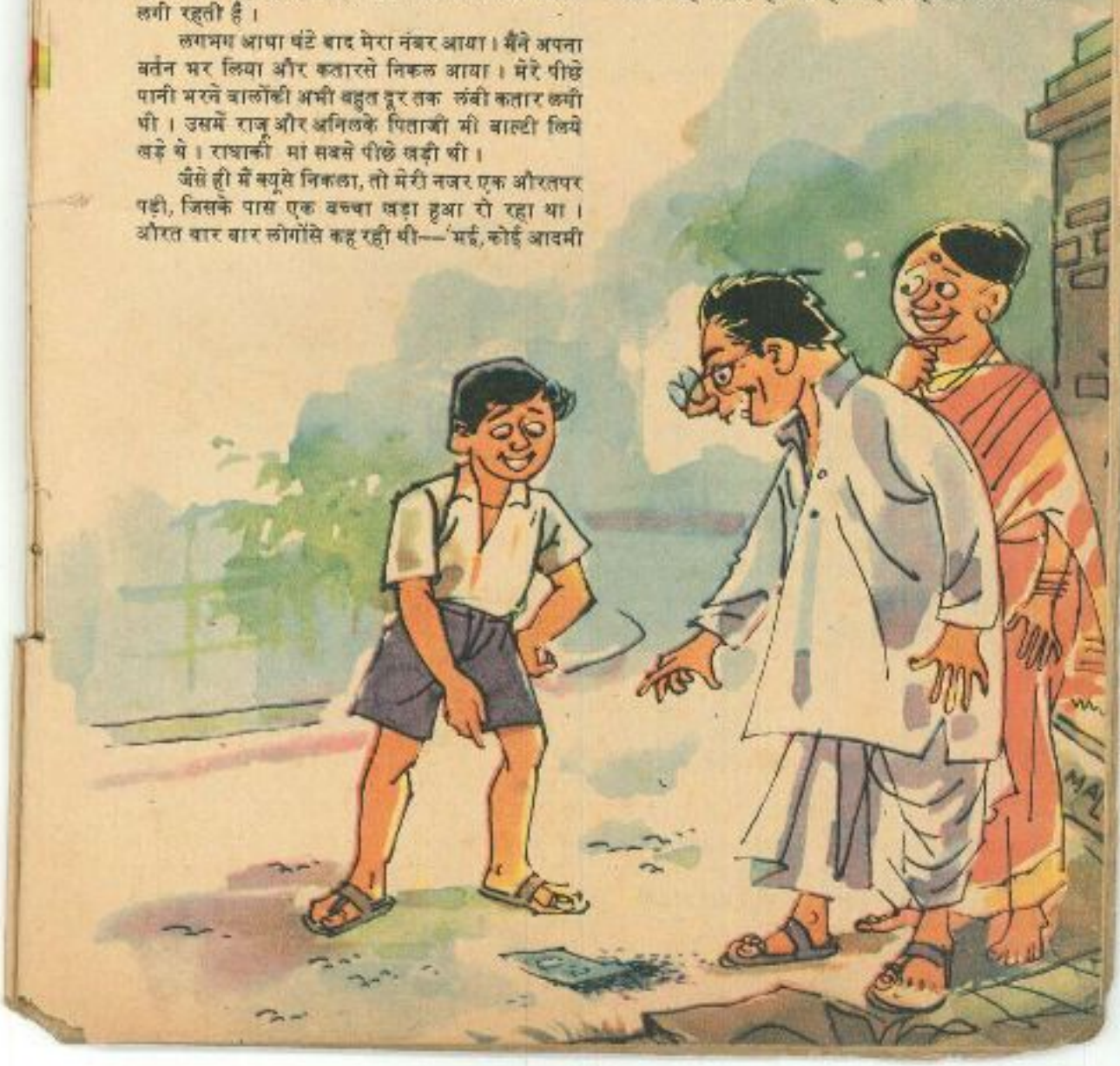

भर जानेके बाद भी नल चलता रहता है। परंतु जब हमें पानी नहीं मिलता तब हम पानीके लिए इधर-उधर भागते हैं और एक एक बूंदको संभालने लगते हैं। अगर हम रोजके जीवनमें भी इसी प्रकार एक एक बूंद संभालकर रखें, तो हमें कभी परेशानी न उठानी पड़े।

आज मैं दूसरा निश्चय यह कर रहा हूं कि कलसे मेरे घरके पानीकी एक बूंद भी व्यर्थ नहीं जाएगी और अगर रास्तेमें कोई नल खुला हुआ है और उसका पानी व्यर्थ जा रहा है, तो मैं पहले उसे बंद करूंगा, फिर आगे जाऊंगा।

७ जुलाई (बृहस्पतिवार): कल शामको मैं जल्दी खेलके मैदानमें पहुंच गया था। हमारे मोहल्लेका दूसरे मोहल्लेवालोंसे क्रिकेटका मैच था। मुझे अपने मोहल्लेकी क्रिकेट टीमने अपने दलका दूसरा कप्तान बनाया था। प्रथम कप्तान राजेश था।

खेल आरंभ होनेके थोड़ी देर बाद ही राजेश और दूसरी टीमके कप्तानमें लड़ाई हो गई और सारा खेल चौपट हो गया। बिना हमारी बारी दिए दूसरे मोहल्लेके लड़के वापस लौट गए। उनके जानेके बाद बहुतसे हमारे लड़के भी घर लौट गए। केवल दो-चार लड़के ही सड़कके किनारे लगे बिजलीके खंभोंके नीचे आ बैठे।

राजेश हम सबमें सबसे अधिक शैतान लड़का है। इसलिए हर बातमें वह हमारा नेता है। उसने चारों ओर देखा और जब पाया कि अंधेरेमें कोई भी आता दीख नहीं रहा है, तो उसने दो छोटे छोटे पत्थर उठाए और निशाना तानकर बिजलीके बल्बकी ओर मारे। निशाना अचूक बैठा और पहले ही निशानेमें उस खंभेकी बिजली गायब हो गई। सड़कपर खंभेके आसपास बल्बके कांचका बारीक चूरा फैल गया।

इसके बाद उसने बिना हिचकके उस सड़कके दो और बल्ब साफ कर दिए और जब तक उनके टूटनेकी आवाज सुनकर कोई उधर आए तब तक वहां हममेंसे कोई भी न था। सब इधर उधर छुप गए थे।

राजेशने सचमुच बेवकूफीका काम किया था क्योंकि ये तीनों बिजलीके खंभे उसके घरके सामने पड़ते थे और इन तीनोंका प्रकाश उसके घरके अंदर तक जाता था। राजेशने यह काम पहली बार नहीं किया था, बल्कि उसके साथ मैंने भी कई बल्बोंको ऐसे ही ठिकाने लगाया था।

आज सुबह जब मैं ग्वालेके यहां दूध लेने गया तब मैंने देखा कि राजेश भी दूध लेने वहीं खड़ा था। मुझे देखकर वह मेरे पास आया और बोला, "चुन्नू, कल रात मुझसे बहुत गल्ती हो गई।"

मैंने उससे पूछा, "तुमसे क्या गलती हो गई?"

"मैंने कल रात घरके सामनेके बल्ब तोड़े थे न?"

मैंने सिर हिलाया। आगे उसने बताया कि बल्ब टूटनेसे कल रात उसके घरके आसपास बिल्कुल अंधेरा रहा। उनके घरके आंगनमें बहुत-सा लोहे और लकड़ीका कीमती सामान पड़ा था। रातमें अंधेरा देखकर वह सारा सामान कोई उठाकर ले गया। सुबह उठकर उन्होंने जब आंगनको देखा, तो वह बिल्कुल साफ था। एक लकड़ीका टुकड़ा भी आंगनमें नहीं था।

"मुझे नहीं पता था कि सड़कके बल्ब केवल सड़कोंपर ही रोशनी नहीं करते बल्कि सड़कके आसपासके घरोंकी सुरक्षा भी उनसे होती है," उसने आगे कहा, "इसके अतिरिक्त हमारे घरके सामने सड़कपर चारों तरफ कांच ही कांच बिखरा हुआ है। जो भी हमारे घर नंगे पैर आएगा, उसके ही कांच चुभेगा। मैंने तो कान पकड़े, अबसे कभी भूलकर भी सड़कके बल्बोंपर निशाना साधनेकी कोशिश नहीं करूंगा।" और सचमुच राजेशने अपने कानोंको पकड़ लिया।

बादमें राजेशके छोटे भाईने शामको बताया कि राजेशको सुबह सुबह बल्ब तोड़नेके लिए मार पड़ी थी। क्योंकि राजेशके नौकरने राजेशको बल्ब तोड़ते हुए देख लिया था और आज सुबह उसने राजेशके पिताजीसे उसकी शिकायत कर दी थी। अब मेरी समझमें आया कि राजेश सुबह क्यों कान पकड़कर कभी बल्ब न तोड़नेकी तौबा कर रहा था। (डायरीका शेषांश आगामी अंकमें)

लाखों में एक

आसमान में लाखों तारे,
लेकिन उन को कौन निहारे,
उगकर सारी रात चमकते,
मगर अंधेरा मिटा न सकते!

एक अकेला चंदा आकर,
अपनी किरणों को फैलाकर,
सब की आंखें शीतल करता,
सब के मन में अमृत भरता!

यह दुनिया भी बहुत बड़ी है,
इंसानों से भरी पड़ी है,
हर कोई है नन्हा तारा,
बनकर चांद करो उजियारा!

—शम्भूप्रसाद श्रीवास्तव

जीनेकी कला – ३

एक भूत पढ़ाई का

– अलकारानी जैन

जब पढ़ाई मर जाती है तो उसका भूत बन जाता है। भूत इसी तरह बनते हैं—सब बच्चे जानते हैं. . .मर जानेके बाद । असली भूत भी इसी तरह बनते हैं या असली भूत होते भी हैं या नहीं, सवाल सामने यह नहीं। सवाल है पढ़ाई मर जानेके बाद कैसे भूत बनती है?

पढ़ाई भूत तब बनती है, जब उसमें जी नहीं लगता। पढ़ाई एक बोझ मालूम होने लगती है। तुम्हारे संपादक दादाके नाम एक बच्चेका पत्र मैंने देखा। उसने अपनी समस्या कुछ इस तरह लिखी थी :

"पढ़नेमें बिल्कुल मन नहीं लगता। जब मैं किसी नेताको देखता हूं, तो मन चाहता है वैसा ही बन जाऊं। कोई डाक्टर या इंजीनियर जब बड़ा काम करता है और उसका खूब नाम होता है, तो जी चाहता है मैं भी डाक्टर या इंजीनियर बनूं। कभी कभी कुशल अभिनेता बननेकी ओर भी तबीअत होती है। लेकिन जब पढ़ने बैठता हूं, तो अक्सर आंखोंके सामनेसे भागने लगते हैं—क्या करूं, बताइए?"

बड़े बड़े मंसूबे बनते हैं। सबकी जड़ पढ़ाईसे शुरू होती है। बिना पढ़े यह बालक डाक्टर तो नहीं, हां सड़कपर आधी-सीधी दवाइयां बेचने वाला मजमेबाज जरूर बन सकता है; इंजीनियर तो नहीं, पर उस्तादके थप्पड़ खा खाकर अधकचरा मैकेनिक जरूर बन सकता है। नेताके बजाय अभिनेता बन सकता है और वह भी असफल कामेडियन! इस होनहार बालकने अपनी असली समस्याको पहचाना और उसका इलाज पूछा—यही एक बात उसे आगे बढ़ाने वाली है। लेकिन फिर भी उसकी समस्या सही है। उसका इलाज उसे खोजना ही है, करना ही है। पढ़ाईमें जी कैसे लगे? जो जिसका काम है, उसमें उसका जी कैसे लगे?

यही समस्या एक बस-कंडक्टरके सामने थी। आठ घंटे हिलती-डुलती बसमें अपने शरीरको संभालते हुए सवारियोंसे झिक-झिक करना, अनेक बार लड़ाई-झगड़ा खड़ा हो जाना, ऊपरसे संध्याको हिसाब करते समय एक-दो रुपए घट जाना किसी भी आदमीका दिमाग खराब करनेके लिए काफी है। क्या तुम समझते हो इस काममें उसका जी लगेगा?

उसने अपनी समस्यापर बहुत सोचा। अंतमें एक इलाज उसने खोज निकाला। उसी दिनसे उसने उसपर अमल करना शुरू कर दिया। नतीजा यह निकला कि हर रोज वह कामपर जाता और काम उसकी ओर देखता मुसकराता रहता।

प्रसन्न वातावरण बनाओ

संध्याके समय सारे दिनके थके लोग घर जानके लिए बसमें चढ़ते हैं। बस उनके लिए इंतजार नहीं करती। वे बसमें इसलिए सफर करते हैं कि घर पहुंचनेका वह सस्ता साधन होता है। वे बहुत देर क्यूमें लगे लगे प्रतीक्षा करते हैं—कंडक्टरपर कोई एहसान नहीं करते। दिन भरके जी-तोड़ कामके कारण वे कभी कभी चिड़चिड़े भी हो जाते हैं। जरा-सा अवसर मिलते ही वे बसके ड्राइवर या कंडक्टरसे झगड़ भी पड़ते हैं। उन्हें इसका तुर्की-ब-तुर्की जवाब मिलता है। अगर मारपीट नहीं भी हुई, तो कुछ चिड़चिड़ाहट, कुछ बड़बड़ाहट और ढेर-सा क्लेश मनमें रह जाता है।

हमारे इस बस-कंडक्टरने मन ही मन यह निश्चय किया कि वह अपनी सवारियोंको प्रसन्न रखेगा, उनके चेहरेपर मुसकराहट लाएगा, अपने वातावरणको खुशियोंसे भरेगा और इस तरह खुद भी खुशीखुर्रम रहेगा। एक वृद्ध महोदय प्रति दिन संध्याको उसकी बसमें पर आते थे। एक संध्याको जब वह बसमें चढ़े और टिकटके पैसे जेबसे निकाले, तो उन्होंने अपने हाथका अखबार बगलमें दबा लिया। हमारे बस-कंडक्टरने भी वह अखबार दोपहरको पढ़ा था। वह जानता था कि वह महाशय शेयर बाजारके दलाल हैं। उसने टिकट काटते हुए कहा, "पांचवें पृष्ठपर शेयर बाजारके एक दलालके बारेमें बड़ी दिलचस्प खबर छपी है, देखिएगा।"

एक मुसकराहट वृद्ध महोदयके मुखपर आई और वह अपना टिकट लेकर सीटपर बैठे। पांचवां पृष्ठ खोलकर उन्होंने वह समाचार पढ़ना आरंभ कर दिया।

उसी बसपर एक अधेड़ महिला स्टेनोग्राफर प्रति दिन

सफर किया करती थीं। एक दिन बस-कंडक्टरने उसकी सबसे आरामदेह सीट खाली देखी और टिकट देते हुए उसने कहा, "देखिए, उस सीटपर बैठिए। वहां आपको ज्यादा आराम मिलेगा।" महिला मुसकरा दी और उसी सीटपर बैठी — उसी दिन नहीं—आगे हर दिन वह बसमें आते ही उस सीटकी ओर लपकती और जब-तब बस-कंडक्टरको उसकी एक कृतज्ञताभरी मुसकराहट उपहारमें मिलती।

प्रति दिनका वही थका देने वाला काम, जिससे छूट भागनेके लिए दूसरे कंडक्टर उत्सुक रहते होंगे, इस बस-कंडक्टरके लिए एक ऐसा काम बन गया, जिसके लिए वह बेचैन रहता था। क्या तुम भी अपनी पढ़ाईके लिए यही नुस्खा इस्तेमाल नहीं कर सकते? अपनेसे बाहर निकलकर दूसरे साथियोंपर नजर डालो। देखो उनमेंसे कितनोंके चेहरोंपर तुम मुसकराहट पैदा कर सकते हो। पिछले लेखमें हमने तुम्हें अपने चेहरेपर मुसकराहट लानेका नुस्खा दिया था। यह नुस्खा उससे भी ज्यादा मीठा है।

अध्यापकोंसे व्यवहार

पहले वक्तोंकी बनिस्बत आजका औसत अध्यापक अधिक चिंताओंसे ग्रस्त रहता है, पहले थोड़ा तनखा मिलनेपर भी वह अपने परिवारका गुजारा कर लेता था। आजकल अधिक वेतन पानेपर भी वह पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने, ट्यूशन करने या ऊपरका कोई लिखने-पढ़नेका ऐसा काम करनेके चक्करमें रहता है, जिससे उसकी आय परिवारके व्ययका मुकाबला कर सके। जो सहृदय विद्यार्थी हैं, जिन्हें स्वयं अपने घरमें मंहगाईसे लड़नेके दृश्य प्रति दिन देखनेको मिलते हैं, वे जानते हैं कि आजका अध्यापक केवल इसी लिए घृणा या उपहासका पात्र नहीं हो सकता कि वह चाहते हुए भी अपने विद्यार्थियोंकी ओर पूरा ध्यान नहीं दे पाता। क्या तुम उसकी कुछ चिंताओंको कम कर सकते हो? अर्थ दान करके नहीं, उसका उचित मान करके। उदाहरणके लिए—अगर इसे बनावट न समझा जाए—यह वार्तालाप देखो:

"आजका पाठ आपने बहुत अच्छा पढ़ाया, सर, मैनी मैनी थैंक्स।"

"ओह! इसका मतलब है हम रोज अच्छा नहीं पढ़ाते — है न?" और यह बात निश्चय ही वह मुसकराकर कहेंगे।

"नहीं, सर, मेरा यह मतलब नहीं था। मुझे वह पाठ विशेष रूपसे कठिन लगता था—अब नहीं लगता।"

आगे अध्यापक महोदय क्या कहेंगे? एक और मुसकराहट तुम्हें उपहारमें देंगे और शायद कहेंगे, "इसे एक दो बार फिर ध्यानसे पढ़ना, यह कोई मुश्किल चीज नहीं है। कुछ समझमें न आए, तो तुम मेरे पास आ सकते हो। मुझे विश्वास है तुम्हारा रैंक आएगा।"

तुम्हें परीक्षामें रैंक मिले या न मिले—लेकिन जिनके ज्ञानसे तुम्हें ज्ञान प्राप्त करना है उनकी निगाहमें तुम बहुत ऊंचे उठ गए हो। दूसरे कई विद्यार्थी बड़े मजेमें कह सकते हैं कि तुम मक्खन लगानेकी कलामें कदम रख रहे हो। किंतु तुम विश्वास रखो, जो अपनेसे बड़े और गुणी जनोंका मान नहीं कर सकता, वह स्वयं कभी गुणी नहीं हो सकता—चतुर भले ही बन सकता हो। वास्तविक ज्ञानके मुकाबलेमें चतुराई ज्यादा दूर नहीं चल पाती। हर मेहनत करने वाला अपनी मेहनतकी कद्र चाहता है और जो उसे वह देता है वह उसके लिए विशेष स्नेहका पात्र हो जाता है। यदि शब्दके सही अर्थ लिए जाएं, तो मक्खन लगाना झूठी तारीफ करनेको कहते हैं। ऐसा कभी मत करो। यह चतुराई बड़ी जल्दी खुल जाती है।

साथियोंको सुझाव दो

कभी कभी तुम कोई बहुत अच्छी किताब पढ़ते हो या पत्रिका देखते हो। अपने किसी साथीसे किसी दिन कहकर तो देखो कि अमुक पुस्तक बहुत अच्छी है, और अगर वह चाहे, तो तुम उसे पढ़नेके लिए लाकर दे सकते हो। अपनेसे होशियार साथीसे तुम कोई सवाल पूछ सकते हो। हो सकता है वह मन ही मन अपनी मूंछ मरोड़े लेकिन आगेसे वह ध्यान रखेगा कि तुम उसकी सहायताके पात्र हो। किसीसे पेंसिल मांग लेना और किसीको रबड़ उधार देना—अगर तुम ध्यान दोगे, तो तुम्हें अनेक विद्यार्थी ऐसे मिलेंगे जो अपने साथियोंको अपने साथ किसी न किसी व्यापारमें उलझाए रखते हैं। उनके लिए कक्षा या स्कूल एक क्रीड़ा-स्थल होता है, जहां जाकर वे अपने परिवारकी कमियों तकको भूल जाते हैं।

अगर तुम यह समझते हो कि पढ़ाई कोई ऐसी चीज है, जिसमें नाक तक डूबकर ही तुम पार उतर सकते हो, तो कुछ ही समय बाद तुम्हें मालूम होगा कि तुम्हारी धारणा गलत थी। पढ़ाई सदैव प्रसन्न वातावरण चाहती है, चारों ओर सहृदय वातावरण चाहती है, और चाहती है तुम्हारा संपूर्ण ध्यान। यह बात भी नहीं कि केवल अपने कामसे काम रखने वाले विद्यार्थी फर्स्ट नहीं आते। लेकिन देखा अक्सर यही गया है कि ऐसे विद्यार्थी भले ही प्रथम श्रेणीमें उत्तीर्ण हो जाते हों, लेकिन यथार्थ जीवनमें वे कुएंके मेंडक ही रह जाते हैं। वे अपने आसपासके लोगोंको भी कभी अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर पाते। नतीजा यह निकलता है कि उन्नतिके अनेक ऐसे अवसर, जो अपने चारों तरफ प्रसन्न वातावरण बनाकर रखने वाले लोगोंको अनायास ही हाथ लग जाते हैं, उनके कभी हाथ नहीं आते। उनके लिए केवल एक मार्ग रहता है, और

state bank, Bijnor,

यदि दुर्भाग्यसे कभी उनकी गाड़ी पटरीसे उतर गई, तो गए कामसे!

ध्यान रखो, अगर तुम्हें सिर्फ किताबें रटकर परीक्षा पास करना होता, तो शिक्षा विभाग तुम्हारा स्कूल-कालिजमें जाना अनिवार्य न रखता। जो विद्यार्थी शिक्षा विभाग द्वारा दी गई सुविधाओंका लाभ उठाकर प्राइवेट ही परीक्षाएं पास करते हैं, वे निश्चय ही पढ़ाईके उस वैभवसे वंचित रह जाते हैं, जो स्कूल-कालिजोंमें व्याप्त शिक्षाके, सहयोगके, परस्पर व्यवहारके वातावरणसे अपने आप मिलता चलता है।

ऊपरकी इस सारी बहसका अर्थ यह हुआ कि पढ़ाईका भूत उन्हें ही डराता है, जो अपनेको अकेला बनाकर रखते हैं। उनके लक्ष्य भटकते रहते हैं। वे कभी डाक्टर बनना चाहते हैं, कभी इंजीनियर, कभी नेता, कभी अभिनेता—और अगर जल्दी ही उन्हें अपनी कमजोरी मालूम नहीं हो पाती, तो वे कुछ भी नहीं बन पाते। अपने माहौल,अपने वातावरणके अनुकूल बनना और प्रयास द्वारा उसे अपने अनुकूल बनाना—मनुष्य आदि कालसे इन्हीं दो राहोंसे चलकर उन्नति करता चला आया है और आज परमाणु युग तक पहुंच गया है। यदि तुम भी अपनी चारों ओर एक 'प्रसन्न-युग' बनानेमें सफल हो गए, तो पढ़ाईका भूत तुम्हें सपनेमें भी सतानेकी हिम्मत नहीं कर सकता।

प्रयत्न करके देखो। ●

पक्षपात!

"ठगना चाहते हो! कहते हो पिक्चर 'बड़ों के लिए' है और मुझसे भी छोटोंको भीतर जाने देते हो!"

आर्कमिडीज (पृष्ठ ९ से आगे)

इसी जटिल समस्याके समाधानमें लगा था अब तक आर्कमिडीज। हौजमें बैठकर नहाते हुए उसने देखा कि हौज भरकर पानी बाहर बहा जा रहा है। तभी यकायक बिजलीकी कौंधकी तरह आपेक्षिक घनत्वके रहस्यका समाधान मिल गया उसे। इस आकस्मिक उपलब्धिसे आर्कमिडीज इतना उत्तेजित हो गया था कि नग्नावस्थामें ही राजपथपर दौड़ने लगा।

ईसासे लगभग तीन शताब्दी पहले आर्कमिडीजका जन्म हुआ था। संसारके प्रसिद्धतम वैज्ञानिकोंमें आर्कमिडीज भी एक है। जब वह किसी वैज्ञानिक चिंतनमें लवलीन रहता था, तब उसे देश-काल-पात्रकी सुधि नहीं रहती थी।

सेनापति मार्सेलसने जब आर्कमिडीजके नगर राज्य सिरेकसपर आक्रमण किया, तो काफी दिनों तक उसे कोई सफलता नहीं मिली। अपनी वैज्ञानिक प्रतिभासे अकेले आर्कमिडीजने उसके आक्रमणका प्रतिरोध किया था। किंतु अंतमें मार्सेलसकी ही जीत रही। विजयी वीर मार्सेलसकी आर्कमिडीजपर बहुत श्रद्धा थी। उसने नगरमें प्रवेश करके अपने सैनिकोंसे कहा, "पता लगाओ आर्कमिडीज कहां है? मैं उसे देखना चाहता हूं।"

ढूंढ़ते-ढूंढ़ते जब सैनिक उसके घर पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि आर्कमिडीज सिर नीचा किए खड़ियासे फर्शपर कुछ अंक लिख रहा है। सैनिकोंने आर्कमिडीजको घेरकर कहा, "ऐ, चलो हमारे सेनापति तुम्हें बुला रहे हैं।" पर आर्कमिडीजने उनकी बात नहीं सुनी। वह किसी जटिल प्रश्नको हल करनेमें लगा था। सैनिकोंने फिर उससे चलनेको कहा। इस बार भी उसे उनकी बात न सुनाई पड़ी। तब सिपाहियोंने उसे झकझोरकर अपनी बात दुहराई। इसपर आर्कमिडीजने बिना अपना सिर ऊपर उठाए ही सिपाहियोंसे कहा, "यहांसे चले जाओ अब। मैं काम कर रहा हूं।" मूर्ख सैनिकोंने आर्कमिडीजको मार डाला और उसकी लाशको मार्सेलसके सामने ले गए। मार्सेलसको अपने सैनिकोंके इस नृशंस कार्यसे हार्दिक दुःख हुआ। ●

हाथ मिलाने

बड़ोंके प्रति सम्मान प्रदर्शित करनेकी परिपाटी अति प्राचीन कालसे चली आ रही है। जब हम अपने बड़ोंसे मिलते हैं, तो उनके चरण-स्पर्श या नमस्कार आदि करते हैं। इसी तरह विदेशोंमें भी बड़ोंके सम्मानके लिए झुककर हाथ मिलाया जाता है। यह उनके प्रति सम्मान प्रकट करनेका एक तरीका है, लेकिन यह कभी कभी मुसीबतका कारण भी बन जाता है।

ड्यूक आफ विण्डसर जिस समय ब्रिटिश साम्राज्यकी यात्रा कर रहे थे, तो अत्यधिक हाथ मिलानेके कारण उनका हाथ जख्मी हो गया था और उन्हें हाथ बांधना पड़ा था।

अस्पतालकी शरण

इसी तरह अमरीकाके राजदूतको इटलीमें एक गार्डन पार्टीमें दो हजारसे अधिक व्यक्तियोंसे हाथ मिलाना पड़ा था। इससे उनके हाथकी हड्डी उतर गई और दो सप्ताह तक उन्हें अस्पतालकी शरण लेनी पड़ी थी।

यही नहीं, पांच सौसे अधिक हाथ मिलानेके बाद हाई कमिश्नर सीलोनकी पत्नीके हाथकी हड्डी टूट गई थी।

भूतपूर्व प्रेसीडेण्ट ट्रूमैन अपने आफिसके समय हजारों व्यक्तियोंसे हाथ मिलाते थे। अक्सर उनके हाथकी नसोंमें सूजन हो जाया करती थी।

अतालतकी डिग्री

कुछ हाथ मिलाने वाले शौकीनोंको कचहरीकी शरण भी लेनी पड़ी है। एक अमरीकी अपने एक पुराने घनिष्ठ मित्रसे बरसों बाद मिला। उसके मित्रने आवेशमें आकर इतने जोरसे हाथ मिलाया कि उसके मित्रकी हाथकी हड्डी ही टूट गई। उन्होंने उसके विरुद्ध एक दावा किया और अदालतने छह हजार पौण्डकी डिग्री दे दी।

सौलह सौ पौण्ड कीमत

बिजली कम्पनीके एक अफसरने शिकागो होटलके स्वागताध्यक्षसे हाथ मिलाया और उसने उसकी ऊंगली तोड़ दी। इस तरह यह हाथ मिलाना १६ सौ पौण्डकी कीमतका पड़ा।

फील्ड मार्शल विसकाउण्ट पच्चीस हजार मीलकी यात्रा करके जब केनेडाके गवर्नर जनरलके पदपर आए, तो उन्हें इतना लंबा

की मुसीबत

— सतीशकुमार जैन

सफर नहीं अखरा जितना बड़ा कि दस हजार व्यक्तियोंसे हाथ मिलानेसे वह थक गए थे।

एक मिनिटमें ३० हाथ

दूसरी प्रसिद्ध हाथ मिलाने वाली इंग्लैण्डके प्रधान मंत्रीकी पत्नी श्रीमती चैम्बरलेन हैं। उन्होंने क्रिसमस पार्टीके अवसर पर ७१६६ व्यक्तियोंसे हाथ मिलाया। इतने व्यक्तियोंसे हाथ मिलानेमें जो समय व्यय हुआ उसका अनुमान एक मिनिटमें तीस व्यक्तियोंसे हाथ मिलाना पड़ता है।

रानी एलिजाबेथ द्वितीय अपने शासनकालमें हजारों व्यक्तियोंसे हाथ मिलानेके लिए बुलाई गईं और उन्होंने हाथ मिलाए भी। अपने आस्ट्रेलियाके भ्रमणमें उन्हें यह सुनकर संतोष हुआ कि वहां हाथ मिलानेकी प्रथा बंद कर दी गई है। यह प्रथा वहां हाथकी लालके रोग फैलनेके कारण बंद की गई थी।

एक अनोखी तरकीब

इंग्लैण्डके प्रधान मंत्री ग्लैडस्टोनकी एक मनोरंजक कहानी कही जाती है। अपने चनावके दौरानमें उन्होंने अपने सैनिकोंसे हाथ मिलाए। हाथको घायल होनेसे बचानेके लिए उन्होंने एक तगड़े पुलिसमैनको अपने पीछे खड़ा कर रखा था—उसका हाथ आगेकी ओरको निकला हुआ था। हाथ मिलाने वाले उसी हाथसे हाथ मिला रहे थे। उनके इस कार्यको कोई समझ न सका, लेकिन फिर भी एक व्यक्ति यह कहनेमें न चूका कि आज तो बुड्ढेका हाथ जवानों जैसा है।

बहुतसे लोगोंका विचार है कि हाथ मिलानेकी प्रथाको ही समाप्त कर दिया जाए और बहुतसे देशोंसे यह प्रथा समाप्त कर भी दी गई है।

ताहीतीमें लोगोंका ऐसा विचार है कि हाथ मिलानेसे खालमें कुछ बीमारियां फैल जाती हैं। अतः उन्होंने एक ऐसी संस्था बनाई है जो इस प्रथाको समाप्त करा रही है।

टर्कीमें हाथ मिलाना बच्चोंकी शिक्षाके साथ जोड़ा गया है, ताकि बड़े होकर वे सभ्य लोगोंकी तरह हाथ मिला सकें।

फ्रांस निवासी हाथ मिलानेके बड़े आदी हैं। वहां ठीक तरीकेसे हाथ न मिलाने वालेको हेय दृष्टिसे देखा जाता है। ●

मेरी खिड़कीमें बैठो (पृष्ठ ३५ से आगे)

"मुझे नहीं मालूम।"

"नहीं मालूम?"

"नहीं।"

"तो पर्चेमें क्या लिखोगे?

नत्थूका मन हुआ कि कहे—'आपका सर!' मगर बेचारा जब्त करके अंदर चला गया था और एक गिलास ठंडा पानी पीकर लौट आया था उन्हीं तायाजीके पास। क्या करता बेचारा; निर्मला चाची तो तायाजीसे पर्दा करती थीं, नत्थूको ही उनकी सेवामें तैनात रहना पड़ा। मगर नत्थूने तभी कसम खा ली थी कि अब अगर वह इस घरमें आए, तो वह सत्याग्रह करेगा, एक दाना मुंहमें नहीं डालेगा, खाना-पीना छोड़ देगा। जाने कहांका रिश्ता निकाल रखा है! कोई दूरकी बुआजी हैं, जिनकी स्वर्गवासिनी जेठानीके ये भाई लगते हैं। एक ही दिनके लिए आते हैं, उतने ही में जान खा जाते हैं।

तो आज नत्थू तायाजीसे हंस हंसकर बातें कर रहा था।

"पहले एक कप चाय नहीं पिलवाओगे, नत्थू?" तायाने कहा।

"क्यों नहीं, तायाजी," नत्थूने कहा और निर्मला चाचीको आवाज लगाई, "अम्मा, तायाजीके लिए बढ़िया चाय बनाओ गरम गरम।"

अंदरसे चूड़ियां खनकनेकी आवाज आई, लगा कि निर्मला चाची अंदर चली गई हैं। इधर तायाजीने पूछा, "क्या बजा होगा?"

"ग्यारह।"

"बारह तो नहीं बजे?"

"बज जाएंगे।"

"तीन बजेकी गाड़ी मुझे मिल जाएगी?"

"स्टेशन पहुंच जाएंगे, तो जरूर मिल जाएगी।"

तभी अंदरसे चूड़ियां बजीं, जो इस बातका संकेत थीं कि नत्थूको निर्मला चाची बुला रही हैं। अंदरसे नत्थू एक खाली गिलास लिये हुए बाहर आया; बोला, "लो, अम्मां कहती हैं, दूध नहीं है। आप बैठिए, मैं अभी दूध लेकर आता हूं।" फिर नत्थू बाजार चला गया। कोई घंटे भर बाद वह लौटा और गिलास अंदर रखकर फिर तायाजीके पास बैठ गया। तब तक तायाजी एक झपकी ले चुके थे। आंखोंपर हाथ फेरते हुए बोले, "अब क्या बजा है, नत्थू?"

"बारह।"

"चायको देर होगी?"

"बस बनी जाती है।"

"फिर खानेका क्या इंतजाम है?"

"चायके फौरन बाद खाना होगा।"

तभी उसी वक्त चूड़ियां बजीं और नत्थू अंदर चला गया। लौटकर उसने तायाजीसे पूछा, "अम्मां पूछती हैं, चायके साथ आप क्या लेंगे? समोसे, कचौरियां या रसगुल्ले?"

"घर पर है या बाजारसे लाओगे?"

"बाजारसे लाऊंगा।"

"तो क्या काजू भी न लेते आओगे?"

"जरूर लाऊंगा," कहकर नत्थू फिर बाजारकी तरफ भाग गया। बेचारे तायाजी, चायका इंतजार करते, बैठे उबासियां ले रहे थे और बार बार सड़ककी ओर देख रहे थे। अबके भी नत्थू कोई पौन घंटेमें लौटा और हाथकी पुड़िया अंदर रखकर बाहर आ बैठा।

"क्या बज गया, नत्थू?"

"एक।"

"ओह! अब क्या देर है?"

फिर चूड़ियां बजीं। नत्थू अंदर गया और लौटकर बोला, "चाय तो कबकी बनी रखी थी, नाश्ता लानेमें देर हो गई, इसलिए ठंडी हो गई। अम्मां दुबारा बना रही हैं।"

मैं समझ नहीं पा रही थी आखिर निर्मला चाचीको क्या हुआ? वह तो तायाजीकी बड़ी खातिर करती थीं और आज तायाजीको ढाई घंटेसे एक प्याला चाय भी नसीब नहीं हुई। तभी चूड़ियां बजीं और नत्थू फिर अंदर गया। एक थैला लेकर वह लौटा, बोला, "अम्मां कहती हैं, आपके लिए चाय वह खुद ही दरवाजेसे बाहर रख देंगी। मैं खानेके साथके लिए कुछ केले, मिठाइयां और दही लेता आऊं। आपको तीन बजेकी गाड़ीसे जाना है न, कहीं रेल न छूट जाए।"

"देर तो नहीं लगाओगे?"

"बस यूं गया और यूं आया," कहकर नत्थू

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

खेल-कूद

टेबिल टेनिस की कहानी

('पराग' के पिछले दो अंकोंमें टेबिल टेनिसके जन्म, खेलके नियमों आदिके बारेमें तुम्हें जानकारी मिल चुकी है। अब इस अंतिम किस्तमें स्ट्रोकोंके बारेमें पढ़ो।)

(3)

टेबिल टेनिसके मुख्य स्ट्रोक आठ हैं : पहला 'बैकहैण्ड पुश', जो नए खिलाड़ियोंका खास स्ट्रोक है। दूसरा 'फोरहैण्ड ड्राइव', जिसका प्रयोग विरोधी खिलाड़ीको मेजसे दूर जानेपर मजबूर करने या उसे पास करनेके लिए किया जाता है। यह स्ट्रोक टेबिल टेनिसके सब स्ट्रोकोंसे ज्यादा स्वाभाविक है और अधिकांश खिलाड़ी इसे आसानीसे और बखूबी खेल सकते हैं। यदि तुम्हें इस स्ट्रोकको खेलनेमें कठिनाई होती हो, तो अपना बायां पांव और कंधा नेटकी ओर झुका हुआ रखो। यह बात सीधे हाथसे रैकेट पकड़ने वाले खिलाड़ीपर ही लागु होती है। तीसरे नंबरका स्ट्रोक है 'बैकहैण्ड ड्राइव', जिसमें

हरिमोहन

बांहोंको बहुत कम हरकत करनी पड़ती है, इसलिए खिलाड़ी इसका प्रयोग करनेपर बहुत कम थकता है। इसमें खिलाड़ी अपना सारा भार बांएसे दाएं पांवपर डाल देता है।

चौथा स्ट्रोक है 'बैकहैण्ड फ्लिक', इसका सही ढंगसे इस्तेमाल करनेपर तुम हारी हुई बाजी जीत सकते हो। इसका मूल सिद्धांत 'फोरहैण्ड स्ट्रोक' जैसा ही है, यानी पांव दूसरे पांवके आगे होना चाहिए। साथ ही सीधे एक हाथमें रैकेट पकड़ने वाले खिलाड़ीका सीधा कंधा नेटकी ओर होना चाहिए। बांया कंधा इस हालतमें दाएं कंधेसे काफी फासलेपर हो, तो ठीक रहेगा ताकि 'बैकहैण्ड फ्लिक' के लिए खिलाड़ीको काफी जगह मिल सके। पांचवें और छठे नंबरके स्ट्रोक हैं 'बैकहैण्ड' और 'फोरहैण्ड चॉप'। ये दोनों खास तौरपर दबावके स्ट्रोक हैं। 'चॉप' करते समय

टेबिल टेनिस संबंधी सामान्य ज्ञान

सवाल : टेबिल टेनिसका सबसे कठिन स्ट्रोक कौनसा है?

जवाब : 'चॉप' या 'रिचॉप' की गई गेंदको उसी तेजीसे वापस करना, जिससे वह आई थी। ऐसे वक्त खूबी इसमें है कि तुम अपना रैकेट गेंदके नीचे लाकर, गेंदपर सीधा (ऊंचा या वृत्ताकार नहीं) और सशक्त प्रहार करो। चॉप और रिचॉपमें निपुण होनेके लिए लंबे अभ्यासकी आवश्यकता है। कोई खिलाड़ी जोरसे चॉप की गई गेंदको कितनी ज्यादा ताकतसे वापस लौटाता है, इससे उसकी कुशलता आंकी जाती है।

सवाल : विरोधी खिलाड़ीको अपने ऊपर हावी न होने देनेके लिए और ऐसे मौकोंपर जब यह समझमें न आता हो कि कौनसा स्ट्रोक खेलना चाहिए, क्या करना चाहिए?

जवाब : विरोधी खिलाड़ीको अपने ऊपर हावी न होने देनेके लिए, उसकी गेंदको वापस करनेके लिए उन सही कोणोंका पूर्वानुमान करना पड़ता है, जिनपर गेंदको लौटाते समय तुम्हें अपना रैकेट रखना चाहिए। गेंदको विरोधी दलके कोर्टमें इच्छित स्थानपर पहुंचानेके लिए उसकी दूरी और दिशापर अचूक नियंत्रण होना आवश्यक है। स्ट्रोकके बारेमें संदेह हो या खेलमें विरोधी खिलाड़ी तुमपर हावी हो, तो गेंदको 'पुश' ही करते रहो। अगर तुमने होशियारीसे काम लिया, तो जल्दी ही खेल तुम्हारे हाथमें आ सकता है। इसके लिए कई तरीके काममें लाए जा सकते हैं : गेंदको हिट करनेकी दिशा बाईसे दाईं ओर कर दो और कई हल्के हिट लगानेके बाद, एकदम एक लंबा और कठोर हिट लगाओ। लंबे अभ्याससे ऐसे तरीके तुम्हें अपने आप सूझने लगेंगे।

परियों की शैया

फोटो : सुभाष र. संचेती

देखो रात आ रही काली,
परियां भी सोने आती हैं;
फूल फूल के हर पराग पर
वे प्यारा गाना गाती हैं।

ठंडी हवा दूर से आकर,
पेड़ों में छुप कर बैठी है;
वह फूलों संग खेल रही है,
पत्ते पत्ते पर लेटी है।

परियां फूलों के पत्तों से,
बना रही हैं अपनी शैया;
वे सोएंगी वहां रात भर,
गाते गाते ता-ता-थैया।

जब तुम सुबह सवेरे जागो,
धीरे से उपवन में जाना;
वहां पड़ी कोई भी कोंपल,
बिना मचाए शोर उठाना।

चुपके चुपके उसके भीतर,
झांकोगे तो मुसकाओगे,
छोटी सुंदर गोल वहां तुम,
एक परी सोती पाओगे!

—विजया

खिलाड़ी गेंदके पिछले भागमें 'कटिंग' करके उसे नीचेकी ओर हिट करता है। होशियार खिलाड़ी चॉप की गई गेंदके नीचे अपना रैकेट रखते हैं। सातवें और आठवें प्रकारके स्ट्रोक हैं—'एंगिल्ड शाट' और 'स्मैश'। इन दोनोंमें गेंदके ऊपर रैकेटको लाकर उसे वापस किया जाता है। 'टॉप स्पिन' के लिए गेंदको ऊपरसे बुहारा जाता है और 'बैक स्पिन' के लिए उसे ऊपरसे चॉप करना जरूरी है।

जापानी खिलाड़ियोंने टेबिल टेनिसके एक पुराने स्ट्रोक 'हाई टाप स्पिन' में कुछ हेरफेर करके एक नए स्ट्रोक—'दि लूप ड्राइव' का निर्माण किया है। इस स्ट्रोकमें रैकेटको घुटनों-से कुछ ऊपर उठाकर, गेंदको उस वक्त हिट किया जाता है, जब वह नीचे गिर रही होती है। रैकेट ऊर्ध्वाकार उठता है और शुरूमें धीमा रहकर, उस समय तेजी पकड़ता है, जब उसका सम्पर्क गेंदसे अलग होनेको होता है। प्रहारके बाद गेंद चापमें बढ़ती हुई विरोधी खिलाड़ी-के कोर्टमें ऊर्ध्वाकार गिरती है और मेजपर गिरते ही आगे और ऊपरकी ओर बढ़ती है। विरोधी खिलाड़ीके लिए एकाएक उसे वापस करना मुश्किल हो जाता है।

चूंकि आजकल टेबिल टेनिसकी अंतर-राष्ट्रीय प्रतियोगिताओंमें रबर-लगे रैकेटोंका प्रयोग अनिवार्य है, इसलिए नए खिलाड़ीको ऐसे रैकेटोंका प्रयोग ही करना चाहिए। पर, ऐसे रैकेटोंका प्रयोग करते समय चाक पाउडरका इस्तेमाल कभी नहीं करना चाहिए।

जैसा कि हम तुम्हें पीछे बता आए हैं, टेबिल टेनिसमें सफलता पानेके लिए अच्छे स्वास्थ्य और चपलताकी बहुत आवश्यकता है। (समाप्त)

(इस स्तंभमें बच्चोंके लिए नव-प्रकाशित पुस्तकोंका परिचय दिया जाता है, जिससे बच्चे उन्हें पढ़ें और अपनी ज्ञानकी प्यास बुझाएं। परिचयके लिए पुस्तकोंकी दो दो प्रतियां भेजी जानी चाहिएं। —संपादक)

● सोवियत रूस पिताके पत्रोंमें (पृष्ठ संख्या २०८); लेखक: डा.जगदीशचन्द्र जैन; मूल्य: पांच रुपये; प्रकाशक: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, चंद्रलोक, जवाहरनगर, दिल्ली–७।

अपने मित्रों और पड़ोसियोंका बिना सही सही परिचय पाए आजके युगमें आगे बढ़ना बहुत मुश्किल है। रूस हमारा एक मित्र और पड़ोसी देश है, इसलिए उसके बारेमें आवश्यक जानकारी रखना हमारे लिए बहुत जरूरी है। यह इस लिए भी जरूरी है कि रूस प्रथम युद्धके बाद सिर्फ पचास वर्षोंमें अपने पैरोंपर खड़ा होकर तेजीसे आगे बढ़ा है और आज वह विश्वका एक बड़ा शक्तिशाली देश है।

'सोवियत रूस पिताके पत्रोंमें'—में इसी शक्तिशाली देशकी एक झलक दी गई है। लेखकने रूसकी अपनी यात्रा, वहांकी सैर तथा वहां प्राप्त आवश्यक जानकारीको १८ पत्रोंमें संजोनेकी कोशिश की है। इनमेंसे कुछ पत्र संक्षिप्त रूपमें 'पराग' के पाठक पहले ही पढ़ चुके हैं। अच्छा होता यदि इन पत्रोंको थोड़ा संक्षिप्त और संपादित करके बच्चोंके उपयोगके लिए अलगसे छापा जाता। वर्तमान रूपमें यह पुस्तक बड़ोंके या कालेजके विद्यार्थियोंके लिए अधिक उपयोगी है, बच्चोंके लिए कम। पुस्तककी छपाई-सफाई अच्छी है।

● टूनमून (पृष्ठ संख्या २४); ● आओ, सुनो कहानी (पृष्ठ संख्या २४); दोनोंके लेखक: महन्त धनराज पुरी; मूल्य: दिया नहीं; ● चन्दा मेरा मामा (पृष्ठ संख्या ३२); मूल्य: दिया नहीं; ● रंगबिरंगे पंख (पृष्ठ संख्या ३०); मूल्य: एक रुपया; दोनोंकी लेखिका: शांति उपाध्याय एम. ए.; ● आओ गाएं (पृष्ठ संख्या २४); लेखक: म. ना. भारतीभक्त; मूल्य: पिचासी पैसे; ● दो साथी (पृष्ठ संख्या ५८); लेखक: श्यामबदन पाठक 'श्याम'; मूल्य: रु. १–६०; ● पेड़ हमारे जीवनदाता (पृष्ठ संख्या ३०); लेखक: डी. एन. मिश्र; मूल्य: एक रुपया; प्रकाशक: ज्ञानपीठ प्राइवेट लिमिटेड, पटना–४।

'टूनमून' और 'आओ, सुनो कहानी'—दोनों पद्य-कथाओंके संग्रह हैं जिनके लेखक हैं महन्त धनराज पुरी। पहले संग्रहमें लेखककी बारह पद्य-कथाएं हैं और दूसरेमें ग्यारह। दोनों संग्रहोंमें सहयोग, दान, न्याय, संतोष, आत्म-प्रशंसा, विनम्रता, लापरवाही, सच्ची दोस्ती आदि विषयोंको लेकर चलने वाली प्रचलित कथाओंको पद्यबद्ध किया गया है।

दोनों पुस्तकें छोटे बच्चोंके लिए तैयार की गई हैं लेकिन यदि लेखक 'वत्स', 'धूर्त', 'तत्पर', 'परस्पर', 'सतगुण', 'कूप', 'पद्मपत्र', 'भृगाल', जैसे तत्सम शब्दोंके प्रयोगसे बचता, तो भाषा अधिक सुबोध हो सकती थी।

हर पद्य-कथाके साथ रंगीन चित्र भी दिए गए हैं।

'चंदा मेरा मामा' और 'रंगबिरंगे पंख' शांति उपाध्यायकी छोटी छोटी कविताओं और शिशु गीतोंके संग्रह हैं। सभी कविताएं और गीत छोटे बच्चोंके लिए हैं, इसलिए उन्हींके अनुरूप विषयोंका चुनाव किया गया है—जैसे 'चंदा मामा', 'कोयल और कौआ', 'कबूतर', 'रेल', 'आम,' 'छाता', 'गाय', 'हाथी' आदि।

सभी कविताएं और गीत बच्चोंके उपयुक्त सरल भाषामें लिखे गए हैं और रंगीन चित्रोंसे युक्त हैं।

'आओ गाएं' कवि म. ना. भारतीभक्तकी १९ बालोपयोगी कविताओंका संग्रह है। कविताओंके विषय हैं—'झण्डा गीत', 'अपना देश', 'वीर सिपाही', 'घोड़ा मेरा,' 'मेला', 'जगमग तारे', 'मीठे आम' आदि।

कविताएं अच्छी हैं और रंगीन-चित्रोंसे युक्त हैं। भाषा सरल, सुबोध और मुहावरेदार है।

'दो साथी' नागरिक शास्त्रके प्रारम्भिक ज्ञानको लेकर लिखी गई है।

दो दोस्त हैं मोती और मीता। मोती गांवका रहने वाला है और मीता शहरका। मीता मोतीके गांव आया हुआ है। वहां उसे मोती गांवके जीवनके बारेमें जानकारी देता है। फिर मोती मीताके शहर जाता है और वहां शहरी जीवनके बारेमें आवश्यक ज्ञान प्राप्त करता है। इस प्रकार छोटी छोटी घटनाओंके द्वारा दोनों मित्र गांवों और शहरोंमें जो नया भारत जन्म ले रहा है, उसे पहचाननेकी, समझनेकी कोशिश करते हैं। वे दोनों आपसी सहयोग, मेहनत, सार्वजनिक वस्तुओंका सही इस्तेमाल, अच्छी संगतिका प्रभाव, पशुओंके प्रति अच्छा व्यवहार, अपना काम अपने हाथ—आदि बढ़िया कामकी बातें भिन्न भिन्न घटना-क्रममें पढ़कर सीखते हैं।

लेखककी भाषा सरल, सुबोध और मुहावरेदार है, स्थान स्थानपर दिए गए चित्रोंने पुस्तकको और उपयोगी बना दिया है।

अंतिम पुस्तक है 'पेड़ हमारे जीवनदाता'।

लेखकने इसमें संवाद शैलीके द्वारा पेड़ोंके बारेमें आवश्यक जानकारी दी है।

पौधा काहेसे पैदा होता है? कैसे बढ़ता है? उसकी खुराक क्या है? वृक्ष कैसे बनता है? उससे मिलने वाले लाभ? ऐसे अनेक प्रश्नोंके उत्तर पुस्तकमें दिए गए हैं।

पुस्तककी भाषा-शैली सुगम और सुबोध है। जरूरी जगहोंपर चित्र भी दिए गए हैं।

सभी पुस्तकोंकी छपाई-सफाई अच्छी है।

—लक्ष्मीचंद्र गुप्त

खिलौनोंका डिब्बा

गड़पराम पिल्ले

-अरुणकुमार

गड़पराम पिल्ले तो बड़ा अजीब नाम रहा! लेकिन अभी तो इसको खाना खिलाना पड़ेगा। यह हमेशा भूखा रहता है। इसको जो भी खिलाओ वही गड़प! इसी लिए तो इसका नाम गड़पराम पड़ा। पिल्ले भी कोई उपनाम नहीं है। यह है ही कुत्तेका पिल्ला। इसको बनानेकी तरकीब हम बताते हैं :

सामनेके पृष्ठपर दिए हुए मुंह, आंखों और कानों तथा पूंछके चित्र काट लो। मुंहके भीतरकी ओर जो दानेदार रेखा दी हुई है उसे भी काट लो।

जूतोंका खाली डिब्बा तुम्हें या तो अपने नए जूतोंके साथ मिला होगा, या किसी जूतेकी दूकानसे ले लो। उसपर काटे हुए मुंह, आंख, कान और पूंछ नमूना आकृति–१ की भांति

नमूना आकृति–१

नमूना आकृति–२

नमूना आकृति–३

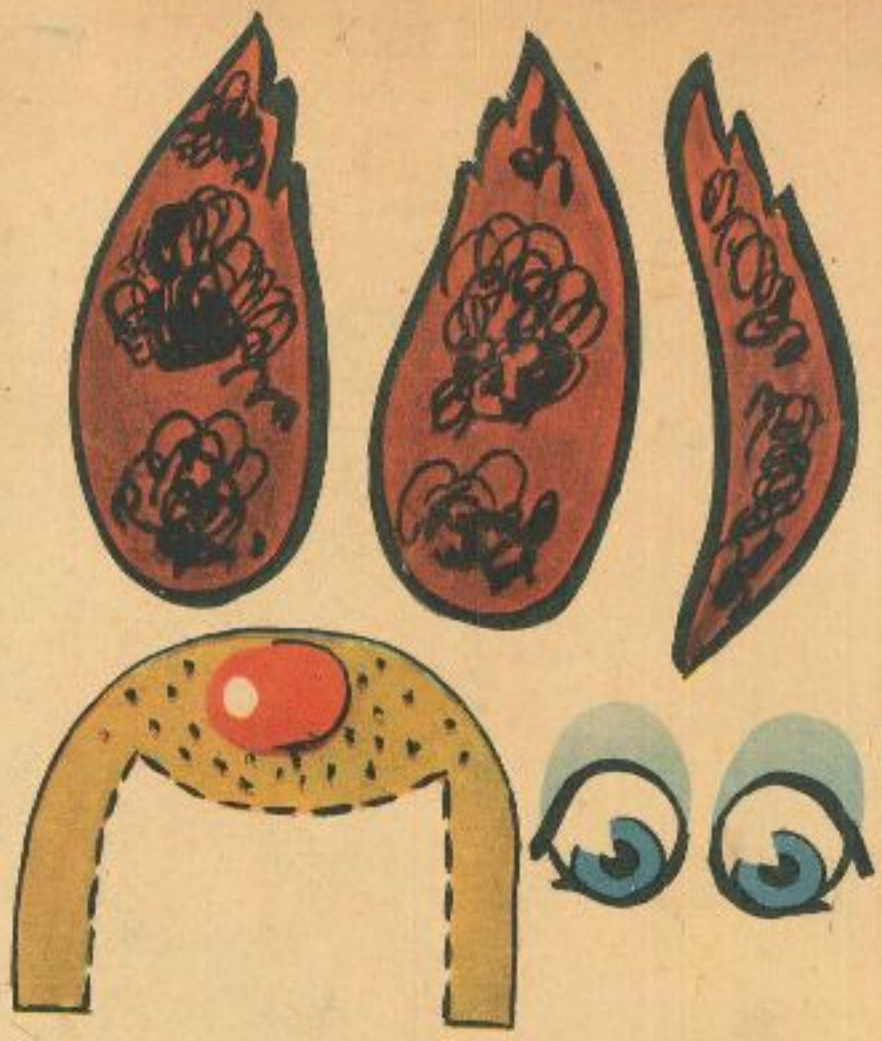

चिपका दो । जहांसे मुंहके भीतरसे दानेदार रेखाओंपर पहले काटा था, वहींसे जूतेके डिब्बे-का गत्ता भी काट डालो (देखो नमूना आकृति –२) । अगर तुमसे न कटे, तो अपने बड़ोंकी सहायता ले सकते हो । यह पिल्लेजीका मुंह हो गया ।

खेलनेका तरीका यह है कि इन 'गड़पराम पिल्ले' जी को एक मेजपर रखो । अब मेजसे छह फीटकी दूरी पर, फर्शपर एक रेखा चाकसे बना लो । दो या तीन साथी बड़े मजेमें इससे खेल सकते हैं । हर एकके हाथमें दस-दस बटन, गोलियां (मिठाईकी या कांचकी) या इसी तरहकी फेंके जाने वाली चीजें होनी चाहिएं। हर खिलाड़ी-के पास अलग अलग रंग की गोलियां होनी चाहिएं।

अब बारी बारीसे, चाककी रेखा पर बिना झुके, दूरसे ही पिल्लेके मुंहमें गोलियां फेंकों (देखो नमूना आकृति–३) । जब हर एकको दस-दस बारी मिल जाएं, तो पहली पारी खतम! देखो किसकी गोलियां सबसे ज्यादा पिल्लेने अपने मुंहमें गड़प की हैं, बस, वही खिलाड़ी जीत गया ।

यह तुम्हारे खिलौनेके डिब्बेका एक स्थायी खेल हो गया न? अब अगले मास और भी मजेदार खेलका इंतजार करो ।

●

स्टेट - बैंक, बिजनौर

एक था लड़का

● हरिश्चंद्रसिंह

एक था लड़का। उसके मां-बाप बहुत गरीब थे। वे झोंपड़ीमें रहते थे। पिता मजदूरी करता था।

लड़का जब बड़ा हुआ, तो उसका पिता उससे खेतमें काम करवाने लगा। खेतमें रात-दिन काम करना उसे अच्छा न लगता था। कुछ समय बाद उसने खेतमें काम करना छोड़कर जहाजपर नौकरी कर ली।

जहाज उसके घर ओहियोसे मिसीसिपी नदीमें होकर न्यू ओरलिन्स तक जाता था। उन दिनों न्यू ओरलिन्स नीग्रो लोगोंकी खरीद और बिक्रीका बड़ा अड्डा था। जहाजमें अधिकतर उनके व्यापारी और बेचारे नीग्रो ही आते-जाते थे।

एक बार किसीने एक नीग्रो लड़केको एक व्यापारीके हाथों बेच दिया। जब उसके नए मालिकने उसे कोड़े मारकर चलनेके लिए कहा, तो वह भागकर जहाजमें घुस गया। मालिक भी उसके पीछे पीछे जहाजपर चला आया और उसे पकड़कर कोड़े मारने लगा।

उस नीग्रो लड़केको इस तरह मारे जाते देखकर नाविक लड़केसे न रहा गया। उसने मालिकके पीछे की ओरसे आकर उसका कोड़ा छीन लिया। मालिकने कप्तानसे शिकायत की, पर उसने भी मालिककी बात न सुनी, उल्टे उसको ही बुराभला कहा।

जानते हो, वह नाविक लड़का कौन था? वह लड़का था अब्राहम लिंकन, जो बादमें चलकर अपनी योग्यता और कठोर परिश्रमके बलपर संयुक्त राज्य अमरीकाका राष्ट्रपति बना। उसने अपने राष्ट्रपति कालमें नीग्रो लोगोंको समान अधिकार दिलानेके लिए बहुतसे सराहनीय काम किए। आज वह नहीं है, पर इतिहासमें उसका नाम अमर है।

आओ मेरी खिड़कीमें बैठो (पृष्ठ ४७ से आगे)

फिर भाग खड़ा हुआ। तभी आश्चर्यसे मेरी आंखें फल गईं। मैंने देखा, निर्मला चाची दाईं तरफ गलीसे आईं और तायाजीको देखते ही घूंघट निकाल घरमें चली गईं।

"कब आए, जेठजी? माफ कीजिएगा, घरमें कोई ह नहीं, इसलिए खुद ही बात कर रही हूं," निर्मला चाची दरवाजेकी आड़से बोलीं।

"तुम घरमें नहीं थीं, बहू?"

"मैं तो मुहल्लेमें एकके घर गई थी। पर नत्थू तो था, कहां चला गया?"

"तुमने उस बाजार नहीं भेजा?"

"मैं तो अभी चली आ रही हूं।"

"कोई और औरत जात घरमें है?"

"नहीं तो।"

"फिर चूड़ियां कौन खनकाता था?"

थोड़ी देर निर्मला चाची चुप रहीं और फिर उन्होंने चूड़ियोंका एक गच्छा धीरेसे दरवाजेके बाहर सरका दिया, जिसमें काला धागा बंधा था और उसका एक छोर वहीं चबूतरेपर रखा था, जहां नत्थू बैठा था।

जल्दी जल्दी निर्मला चाचीने तायाजीको चाय बनाकर दी। रास्ते जाते परमूभाईको आवाज देकर बाजारसे चायके साथके लिए कुछ मंगवाया और तायाजीके सामने रख दिया। वे अब तक इतना खा भी न पाए, खाना तैयार हो गया। थालीमें पहली गरम फूली हुई पूड़ी आई कि उधरसे नत्थू आया.....

तायाजीको खाना और मिठाइयां उड़ाते देखकर नत्थू सकतेमें आ गया, अम्मां तो कह गई थीं शाम तक लौटेंगी! तायाजी हंसकर बोले, "मिठाइयां नहीं मिलीं?"

"जी?"

"क्या बजा है?"

"दो बजनेमें दस मिनिट हैं।"

"तीनवाली गाड़ी मिलेगी?"

"मुझे नहीं मालूम," कहकर नत्थू घरमें घुसा और घुसते ही चिल्लाया: "हाय मां, मर गया, अब नहीं करूंगा...अबके छोड़ दो, मां, बस, अबके . . हाय, उई, मरा-मां . . ."

और फिर निर्मला चाचीकी आवाज आई, "बस, यहीं बैठो चुपचाप, कहीं खेलने नहीं जाओगे और खानेको एक दाना नहीं मिलेगा आज।"

बेचारा नत्थू दरवाजेके पास बैठा तायाजीको मिठाइयां उड़ाते देख रहा था। ●

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई वर्षोंसे 'पराग' में शिशु-गीत छापे जा रहे हैं। इन शिशु-गीतोंके चयनमें काफी सावधानी बरती जाती है, क्योंकि शुद्ध शिशु-गीत लिखना उतना आसान नहीं है, जितना समझा जाता है। इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चारसे छह साल तकके बच्चे आसानीसे जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें। इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलतासे जबानपर चढ़ जाती है।

जाड़ा आया

जाड़ा आया, जाड़ा आया,
कांपी सबकी बोटी बोटी।
सूरज ने जब आंख दिखाई,
जाड़ा भागा लिए लंगोटी!

चम चम धूप चली पीछे से,
कान पकड़के कसम खिलाई,
"दिन में नहीं टिकूंगा अब से,
राम दुहाई, राम दुहाई!"

—लखन

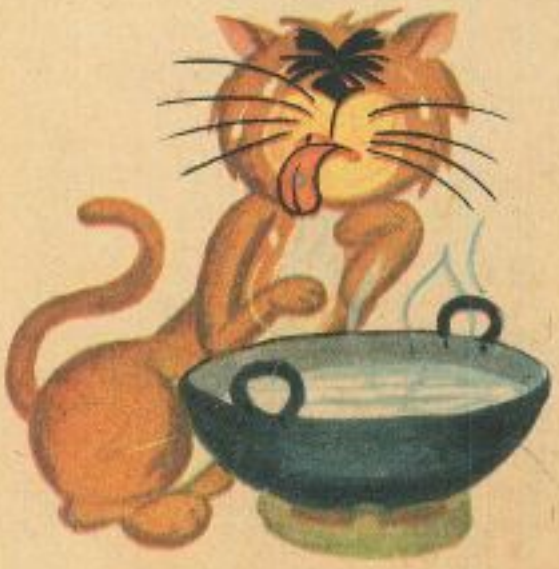

कजरी बिल्ली

एक दिवस चौके में पहुंची,
कजरी बिल्ली रानी,
भरी कड़ाही देख दूध की,
मुंह में आया पानी!

इधर-उधरको ताक दूधमें—
उसने जो मुंह डाला,
चीख पड़ी कर म्याऊं म्याऊं,
पड़ा जीभपर छाला!

—रवींद्र 'शलभ'

नदिया और नानी

नदिया बोली, 'ले लो जी!
ठंडा ठंडा पानी,'
मटकी लेकर आई जब
गड़मड़ बूढ़ी नानी।

नदिया का नानीजी से
पड़ा नहीं था पाला,
गट-गट गट-गट पानी सब
मटकी ने पी डाला!

यह देख मछलियां बोलीं,
'नदिया को दो छोड़,
वरना हम भी साथ चलेंगी
मटकी देंगी फोड़!'

—धीरेंद्र काश्यप

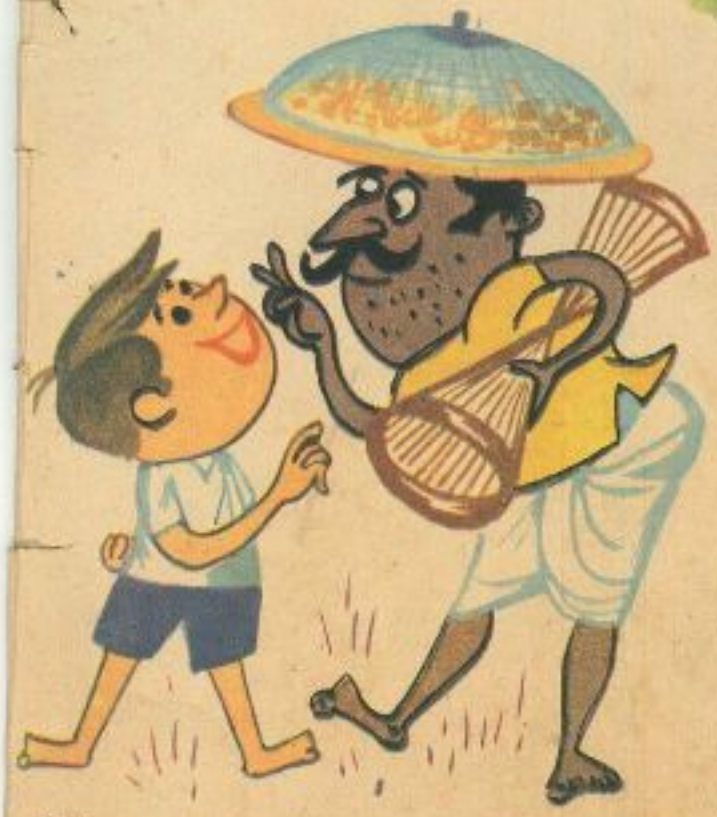

सौदा

मेले को जाता था मुन्ना,
देखा फेरीवाला;
बोला, "भैया, मुझे चखा दो,
रे चटपटा मसाला!"

फेरीवाला नजर फेर कर
बोला, "लाओ पैसा;
पैसा पास नहीं, भइ मुन्ने,
फिर यह सौदा कैसा?

—सरस्वतीकुमार 'दीपक'